प्रकाशक—चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

मुद्रक—विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

चतुर्दश संस्करण, संवत् २०१७

मूल्य १-००

Chowkhamba Sanskrit Series Office,

P. O. Box 8, Varanasi.

1960

|| श्रीः ||

आशंसा

राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद

'विद्यालङ्कार चिकित्सक-चूडामणि कवीन्द्र पण्डित श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र जी ने आयुर्वेद का अध्ययन पुनर्जीवित करने में जो उत्कट सेवा और त्याग किया है वह अत्यन्त आदरणीय है। संस्कृत दर्शन और काव्य-साहित्यादि के धुरन्धर विद्वान होते हुए भी, आपने आयुर्वेद के प्रचार मे ही, अपने जीवन का अधिकाश समय लगाया है। केवल शरीर ही नही, अपनी सम्पत्ति भी इसी सदुद्योग में लगा दी है।

इसी सिलसिले में, आपने गूलर के गुणों का आविष्कार करके मनुष्य और जन्तुमात्र का बड़ा उपकार किया है, गावों मे बराबर वैद्य या डाक्टर नही मिलते, मिलते भी हैं तो गरीबों को दवा के दाम देने के लिए, पैसे नही होते। भारतवर्ष को ऐसी सस्ती और सुलभ ओषधियों की जरूरत है, जो गरीब बिना खर्च के और वैद्य की सहायता के बिना ही उपयोग में ला सकें। गूलर के गुण ऐसे हैं कि उससे अनेक रोगों की चिकित्सा हो सकती है। इसी बात को जनाने के लिये और देश में इस के प्रचार के लिये आपने 'आरोग्य–प्रकाश' वा 'गूलर-गुण–विकाश' नामक पुस्तिका भी लिखी है जो एक सरस काव्य भी है। इस विषय के प्रचार में भी आपने बहुत परिश्रम और द्रव्य का व्यय किया है। और एक मात्र उद्देश्य मानवजाति का उपकार ही रहा है। इस पुस्तक के प्रचार से गूलर के गुण लोग जानेंगे और अनेक बीमारियों से बिना खर्च के ही अपनी रक्षा कर सकेंगे, असाध्य हैजा आदि के आक्रमण से मैंने स्वय भी इसके अद्भुत गुणों से रोगियों की जानें बचाई हैं—

इसलिये इस पुस्तक का भी प्रचार होना चाहिये और स्कूलों-पाठशालाओं मे भी इसको ऐसा स्थान मिले कि आरम्भिक शिक्षा से उच्च–शिक्षा तक इस का पढाना अनिवार्य हो और काग्रेसी तथा ग्राम-सुधारक लोक-सेवकों के पास यह पुस्तक रहे, जिससे बहुत उपकार होगा। आशा है कि जनता इसे अपनायेगी और आपकी इस पुस्तक को सफल बनाने में सहायक होगी।

—राजेन्द्रप्रसाद

भूमिका

पं० पद्मनारायण आचार्य एम० ए०

प्रोफेसर—छत्तीसगढ़ कालेज, रायपुर (सी० पी०)

(१) गूलर के फल, फूल, पत्ते, दूध और उस से निकाले हुए सार (गूलर-सार, उदुम्बरसार) आदि सभी चीजों में चमत्कारी गुण हैं। यह ग्रन्थ इसी कथा से भरा है। स्वयं एक बार पढ़िये और परीक्षा कीजिये।

(२) इस ग्रन्थ के प्रणेता और इस महौषध के आविष्कर्त्ता और इसी वर्ष ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से 'वैद्यरत्न' की उपाधि-प्राप्त चिकित्सक चूड़ामणि पं० चन्द्रशेखरधर जी मिश्र ने इस संस्करण में कुछ बातें और बढ़ा दी हैं। उनसे ग्रन्थ की काया और महत्ता दोनों ही बढ़ गई है।

(३) गूलर के प्रयोग के बारे में प्रणेता ने काफी लिखा है अतः हम तो एक ही बात कहेंगे कि यह गरीबों के लिये अद्भुत दवा है। इसका मैंने अनेक बार अनुभव किया है। यहां केवल एक कथा सुनाऊंगा। कोई छ साल पहले मेरे गांव में एक भर (जाति के मजदूर) को हाथ में फोड़ा हुआ। उचित औषध न हो सकने से वह जहरीला घाव इतना बढ़ गया कि अंगूठे से लेकर कुहनी तक का पूरा हाथ ही सड़ गया। इस प्रकार ९-१० महीने बीत जाने पर वह भर मेरे यहां काशी आया। डाक्टरों ने कहा 'हाथ काट देना ही एक उपाय है'। दो-एक वैद्यों ने कहा कि चार-छ महीने दवा करने से शायद कुछ लाभ हो। असल में वह अब असाध्य हो गया है। उस भर के जमींदार भी गरीब थे, उसे छ महीने तक औषध और भोजन देने में समर्थ न थे। तब मैंने उस भर को कहा कि तुम गूलर की पत्ती पीसकर फोड़े पर लगाओ और पत्ती ही पीसकर दोनों समय शर्बत पीओ, गूलर के फल कच्चे—पके और तरकारी बना कर जैसे बने खाओ यही तुम्हें अच्छा कर देगी। असहाय तो था ही, उसने मेरी बात मान ली और कोई दो महीने में बिलकुल चङ्गा हो गया। अब वह अच्छी तरह काम करता है। यह आश्चर्य सबकी आंखों के सामने हुआ है। तब से न

जाने कितने मित्र गूलर का प्रयोग कर चुके। स्वयं मैं भी गूलरसार की उपयोगिता से कई बार चकित हो चुका हूँ। कोई सात-आठ दिन से मुझे दांत का दर्द था। कई दवाएं कर चुका था, पर लाभ नही होता था उस दिन रात को गूलरसार की पट्टी दातों पर रखकर ऊपर से थोड़ा सेंक दिया। बस दर्द बन्द हो गया। हमारी माता जी के तो हिलते दात इस गूलरसार के एक-दो बार दतोन के समय लगा देने से फिर से मजबूत और दृढ हो गये हैं।

यात्रा में गूलरसार की शीशी बहुत लाभ पहुँचाती है। कई बार जब लोगों को ट्रेन के डब्बे में अथवा निविड़ दिहात में चोट लग जाती है उस समय गूलरसार का तत्काल लाभ दिखाकर हमने लोगों से बड़ा आशीर्वाद पाया है। अतः हम दूसरों को भी गूलरसार साथ रखकर लाभ उठाने की सलाह देंगे।

गूलर की दवा इतनी सुलभ और सस्ती है कि ग्राम-संगठन के कार्य में इससे बड़ी सहायता ली जा सकती है। विहार गवर्नमेण्ट इसे काम में ले भी रही है।

सच वात तो यह है कि हमारा विश्वास आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा इन्हीं दो में है। गूलर का प्रयोग दोनों ही के अनुकूल है।

अन्तिम वात केवल एक है कि इस प्रणाली का प्रयोग करिए, स्वस्थ रहिए, इस ग्रन्थ का प्रचार करिए और दूसरों को स्वस्थ वनाइए।

स्वास्थ्य का मूल मन्त्र है—आलस्य छोड़कर नियमों का पालन करना। इसे न भूलिए तभी गूलर भी अपना गुण दिखा सकेगी। अत आलस्य छोड़िए और स्वस्थ वनिए।

श्रावण कृष्ण तृतीया
सं० १९९५ वि०

पद्मनारायण आचार्य

दिनचर्या

प्रतिदिन तथा ऋतुविशेष आदि में आरोग्यप्रद आहार-विहार को दिनचर्या और ऋतुचर्या कहते हैं।

विस्तृत रूप से दिनचर्या और ऋतुचर्या इस छोटी पुस्तक मे लिखना असम्भव है, अतः चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश और अनुभवी वैद्यों के मतानुकूल और अपने प्रत्यक्ष अनुभव के अनुसार संक्षेप में आरोग्य रहने का प्रकार लिख रहे हैं।

सुश्रुत के अनुसार राष्ट्रभाषा में निरोग का लक्षण निम्नलिखित है—

ससदोष, समाग्नि, समीहित है, समधातु मलक्रिय 'सम्मत है।
सुप्रसन्न सुमानस इन्द्रिय है, सततात्मस्वरूप, अरोग वही जन है॥

अर्थात् जिस पुरुष के वात, पित्त, कफ, जिस मात्रा मे और अविकृत रूप के चाहिये रहे, और अग्निबल जैसा चाहिये तथा अन्न का रस, रुधिर आदि सातों धातुओं की जो मात्रा चाहिये और मल आदि का उत्सर्ग तथा क्रिया जिस रूप मे चाहिये हो, और आत्मा प्रसन्न हो, मन प्रसन्न हो, दसों इन्द्रिया ठीक काम दे रही हों वह 'स्वस्थ' वा निरोग है। स्वस्थ मनुष्य अपनी आयु के रक्षार्थ ब्राह्म मुहूर्त में उठकर जगदीश्वर का स्मरण करे, तदनन्तर जहा तक सुभीता हो आरसी (आयना), माला तथा अपने हाथ देखे तथा दही, घी, सरसों, बिल्व और गोरोचन का भी स्पर्श करे।

अनन्तर मल-मूत्रादि त्यागकर पवित्र मृत्तिका से हाथ-पैर धोकर दन्त-धावन (दातून) करे। गूलर के फल जिस डंठल में लगते हैं वह अधिक लाभप्रद दातून है, उससे कुछ दबकर गूलर के पत्ते हैं और उससे दबकर गूलर की पतली डाल है।

कुछ लोग मौलसरी, बरगद, आम और अनार की भी अच्छी दातुन समझते हैं, पर गूलर के दशमांश भी गुण इनमें नही है। जहा गूलर न मिले वहा इनसे काम लेना चाहिये।

जिनके दांत हिलते हों, दांतों से खून आता हो, वे साफ खड़ी मिट्टी १६ भर और खैर २ भर लेकर गूलर के पत्तों के रस में तीन-चार बार भावना देकर सुखाकर १ भर कपूर भी इसमे मिलाकर डाट लगाकर बोतल मे रख दें। इसी से धीरे-धीरे दात और मुंह साफ करें तदुत्तर अपनी प्रकृति के अनुसार स्नान करें। सम्भव हो तो सर्वाङ्ग मे कोठवार वा शुद्ध धूलि लगाकर स्नान करें।

इसके बाद सारे शरीर मे तैल लगाकर मालिश करनी चाहिये। जिसे जो तेल सुभीते का हो, उपकारक हो उसे वही लगाना चाहिये। तिल, सरसो और नारियल का तेल विशेष उपकारक है।

फिर साफ वा कोठवार मिट्टी देह मे लगाकर स्नान करके अङ्गोछे से शरीर को भली भाँति रगड़ कर पोछना चाहिये।

तेल-मर्दन और स्नान आदि से शरीर मे प्लेग आदि के कीडे प्रवेश नही करते, मस्तिष्क और शरीर मे वल आता है।

सप्ताह में दो बार तिल, सरसों तथा कुछ गूलर के पत्ते पीस कर इनका 'उवटन' लगाना वहुत ही स्वास्थ्यप्रद है।

स्नानोत्तर अपने मत (सम्प्रदाय) के अनुसार सृष्टिकर्ता ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। वर्णाश्रम वालों को सन्ध्योपासन की रीति से और अन्य धर्मवालो को अपने मतानुकूल दोपहर और सन्ध्या को भी ईशोपासना करनी चाहिये।

व्यायाम

जिन्हें सुभीता हो उन्हे मल्लयुद्ध, (कुश्ती), दण्ड, मुद्गर आदि से भी व्यायाम करना चाहिये। चलना, फिरना, दौड़ना तथा खेत काटना, लकड़ी चीरना, पानी भरना आदि व्यायाम भी वडे उपकारक हैं।

जो लोग हृदय के दुर्वल (हार्ट डिजीज वाले) हैं उन्हे केवल थोड़ा टहलने ही का व्यायाम करना चाहिये। पर्दानशीन स्त्रियों के लिए धान कूटना, चक्की-जाँत चलाना आदि हितकर है। व्यायाम के वाद सवको अपने-अपने निर्दिष्ट कामों में संलग्न हो जाना चाहिये।

मध्याह्न का भोजन नौ-दस वजे दिन के भीतर ठीक है। भोजन में गेहूँ वा जौ की रोटी, पूड़ी, भात, मूग का जूस, गूलर के फल, टमाटर, परवल, मसूर का जूस, नेनुआ, भिंडी, घेवड़ी, छोटी मूली, चौराई का साग, हिलिचा का साग, नर्म नर्म भण्टे, सफेद कोहडे, भतुए, करैली, सहजन, अगस्त के फूल और फलिया तथा केवाच आदि जिसको जो रुचता-पचता हो खाये पीए।

पुदीना, सौफ आदि देकर आवला की चटनी वा अमावट, अगूर, छुहाड़ा, आदि की चटनी, कागजी नीवू वा सिरका आदि उपकारक है।

जितना भोजन करना है अर्थात् पेट मे जितना अन्न रहने का स्थान है, उसका आधा भाग तो अन्नादि खाकर पूर्ण करे एक चतुर्थांश भाग जल

आदि तरल पदार्थ से पूरा करे और चौथाई भाग को वायु के संचार के लिये खाली छोड़ दे।

जिन्हे सुभीता हो भोजन के अन्त में दूध के साथ कुछ अन्न अवश्य खाय। जो दही खट्टा न हो, उसे भोजन के आदि वा मध्य में थोड़ा जल मिलाकर तथा नमक वा चीनी मिलाकर वा तरकारियों मे मिलाकर खाना चाहिये। तरकारी प्रकृति के अनुकूल चाहे तेल में वा घी मे वा हींग आदि उपकारी मसाला में भी बनी हो तो हर्जा नही।

भोजन करने के बाद १०० पग धीरे-धीरे टहले फिर बिछौने पर आकर लेटे और आठ बार जब तक सास चलती रहे उतान (चित्त) सोवे, १६ बार जब तक सास चलती रहे, दाहिने करवट सोवे, ३२ बार जब तक सास चलती रहे, बाईं करवट सोवे फिर पीछे जिस प्रकार इच्छा हो सोवे।

भोजन के बाद दिन मे कुछ विश्राम अवश्य लेना चाहिये परन्तु सोना नही चाहिये किन्तु सोना दस्त के बीमारों तथा दुर्बल के लिए और जिनका स्वभाव है कि दिन में सोने से ही आराम मिलता है उनके लिये भी हित है।

भोजन करने के बाद ४ घण्टे तक केवल थोड़ा जल पीना चाहिये।

संध्या के पूर्व कुछ हलका जलपान जिसको जो हित हो करे। फिर प्रात के समान शारीरिक कृत्य एव साय सन्ध्या प्राणायाम आदि तथा जगदीश्वर का ध्यान करे।

रात्रि में ९ बजे के पहले भोजन कर लेवे। जिन्हें सुभीता हो भोजन के कुछ देर पर दूध पीकर सोये। सभव हो तो सोते समय तलवे में कोई तेल थोड़ा मल कर सोये।

गर्मी के दिनों मे मसहरी तान कर मैदान में सोना चाहिये।

आम के दिनों में याने आधे जेठ से प्राय: भादों पर्यन्त देशी मीठा आम अवश्य खाना चाहिये। पतले रस वाला आम दूध के साथ अधिक उपकार करता है (बहुमूत्र वालों के लिये आम अहितकर है)।

समय पर सेब, अंगूर, नासपाती, अमरूद, पके गूलर, अंजीर, खीरे आदि उपकारी हैं।

शुभ सम्मतियाँ

पूज्यतम पण्डित श्रीमदनमोहन मालवीय जी

आयुर्वेद के असामान्य और उत्कृष्ट विद्वान्, अतिसम्मानित और लोकोपकार-परायण, वैद्यरत्न, पण्डित चन्द्रशेखरधर जी मिश्र महोदय ने गूलर (उदुम्वरसार) के अद्भुत गुणो का विकाश प्रकाशित कर लोक का बड़ा उपकार किया है। इस उपकार के लिए वे मनुष्यजाति के कृतज्ञता के अधिकारी हैं। वैद्यरत्न जी का 'गूलरगुण-विकाश' नामक छोटा ग्रन्थ इस योग्य है कि उसका अधिक से अधिक प्रचार किया जाय।

पण्डित ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ति शास्त्री एम० ए०

एम० ओ० एल० एन, सुपरिण्टेण्डेण्ट सस्कृत स्टडीज तथा सेक्रेटरी संस्कृत एसोसियेशन विहार और उड़ीसा, पटना।

'सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र' कविकुल-कुमुद-कलाधर, चिकित्सक-चक्रवर्ती, श्रद्धेय श्रीयुत पण्डित चन्द्रशेखरधर मिश्र ने गूलर के पत्तो के गणनातीत गुणों, अनन्त अप्रतिहत अलौकिक शक्तियों तथा सर्वतोमुखी उपयोगिता का प्रयोग कर प्राणिमात्र का जो महान् उपकार किया है, इसके लिए ससार उनका अनन्त-काल तक अत्यन्त कृतज्ञ रहेगा।

महामहोपाध्याय कविराज श्रीगणनाथसेन सरस्वती, एम० ए०, एल० एम० एस०

'गूलरगुणविकाश' की हिन्दी पुस्तक बालकों के हाइजीन के उपयुक्त है। इससे संसार का वड़ा उपकार होगा।'

चम्पारन के हेलथ आफिसर एस० मिश्रा

मैं अनुरोध करता हूँ कि—'गूलर-गुण-विकाश' स्कूलो की पाठ्य-पुस्तकों मे सम्मिलित किया जाय, क्योंकि—'उदुम्बर' जैसी सुलभ और गुणकारी ओषधि के व्यवहार की विधि लड़कपन से ही जानने योग्य है।

विषय-सूची

सूचना

(१) राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद की आशंसा और भूमिका पर ध्यान दीजिये ।

(२) महामना मालवीयजी, म० म० गणनाथ सेन आदि अनेक महापुरुषों की शुभ सम्मतियाँ अवश्य ही पढ़िये ।

(३) 'गूलर प्रचार' की संस्था अब रजिस्टर्ड हो गई है ।

(४) 'गूलर गुण विकाश' बिहार की संस्कृत प्रथम परीक्षा की पाठ्य-पुस्तक है ।

(५) इस संस्करण में जो परिवर्तन हुए हैं वे और बड़े महत्त्व के हैं ।

(६) परीक्षा कीजिए, गूलरचिकित्सा पूर्णतः आयुर्वेदिक भी है जिसे प्राकृतिक चिकित्सा ही कहना चाहिये ।

(७) गूलर-गुण-विकाश का तथा अच्छे चिकित्सकों का लक्ष्य है केवल स्वास्थ्य ।

(अर्थ नहीं, धन नहीं, यश नहीं)

'कामये दुःखतप्तानामार्तानामार्तिनाशनम् ।'

विनीत—

संपादक तथा प्रकाशक

❀ श्रीगणपतये नमो नमः ❀

आरोग्य-प्रकाश

वा

गूलर-गुण-विकाश

मङ्गलाचरण

[छन्द हरिगीतिका]

उल्लसित हित सत्पत्रलक्ष्मी हैं हरिद्युतिधाम हैं,
दुर्गत जनों के दुःख हरने में प्रशंसित नाम हैं।
परितप्त की क्षतिपूर्त्तिकर फल दान देना काम हैं,
जय जय जयद यज्ञाङ्ग जिनको आज अमित प्रणाम हैं।

टीका—सभी यज्ञों में सबसे पहले श्रीगणेशजी की ही पूजा होती है। इसलिये यज्ञ के प्रधान अङ्ग श्रीगणेशजी ही हैं। अत इस पुस्तक को सम्पूर्ण, और जनता के उपकारी होने के लिये आप ही को प्रथम प्रणाम करते हैं। 'जयद यज्ञाङ्ग' (विजयदाता श्रीगणेशजी) का सदा ससार में जय जय (कार) है (और) आज उन्हें अमित प्रणाम (भी) है, (जिनकी) हित सत्पत्र-लक्ष्मी (अर्थात्) 'सत्' सज्जनों के 'प' (पालक के) 'त्र' (रक्षक) 'सत्पत्र' हैं, (ऐसे) हित (हितकारी) सत्पत्र (की) लक्ष्मी (शोभा वा सम्पत्ति) उल्लसित है। (जो) 'हरि' शिवजी के द्युति शोभा वा प्रकाश के) धाम (गृह वा स्थान) हैं [और] जिनकी दुर्गति हो रही है वा जो दरिद्र हैं [ऐसे] जनो (भक्तों) के दु:ख हरने में [भी जो] प्रशंसित नाम हैं (जिनके नाम की प्रशसा की जाती है)। [त्रिविध] तापों से जो सन्तप्त हैं [उनकी] क्षतिपूर्ति

(अर्थात् जिस अभीष्ट वस्तु में न्यूनता आ गई हो, उसकी पूर्ति (पूर्णता) कर फल (धर्मादि का) देना ही (जिनका) निरन्तर काम है।

अब हम अतीत समय के तथा वर्तमान समयके प्रत्यक्ष भगवद्रूप पण्डित, महाकविगणो को जो आगे भगवद्गीता के—

'यद् यद् विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्' ॥

इस वाक्यानुसार तथा 'आग्नेय पुराण' के—

'काव्यालापाश्च ये केचिद् गीतकान्यखिलानि च।
शब्दमूर्तिधरस्यैते विष्णोरंशा महात्मनः' ॥

इस वाक्य के भी अनुसार विष्णु भगवान् के विशेष तेजोंश हैं उनसे सप्रणय प्रणामपूर्वक प्रार्थना करते हैं कि इस कार्य-पथ में जो स्खलन हो उसे क्षमा करते हुए अपनी अनुपम अनुकम्पापूर्ण, उचित, उदार उपदेश और 'उपादेय' उपाय से उदुम्बर विज्ञान के द्वारा मानव जाति तथा पशु जाति की प्राणरक्षा हो ऐसा ही इस कार्य मे आशीर्वाद पूर्ण प्रयत्न करें।

इसके अतिरिक्त हम गोस्वामी तुलसीदास जी के परम भक्त हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी अपने मानस रामायण के आरम्भ में—

'सिया-राम-मय सब जग जानी।
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी ॥

इस आपकी ही चौपाई से सीताराममय' सारे ससार को प्रणाम कर सफल और कृतार्थ होते हैं यह भी उनके वडे भाग्य की बात है।

हमें भी उल्लिखित स्वामी जी के मार्गानुसार चलने की उत्कण्ठा है परन्तु ज्ञान और तपस्या की कमी से—'उद्बाहुरिव वामन' हो रहे हैं। तथापि हम अपने ऊपर ईश्वरानुग्रह की कृतघ्नता नहीं चाहते हैं। अपने को इसी मे भाग्य-शाली समझते हैं और दो एक पद्यों के द्वारा देवतामय ब्रह्माण्ड की वन्दना, 'उदुम्बर-विज्ञान' से लोक-रक्षार्थ किसी प्रकार कर पाते हैं।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार आपने छिपे हुये इस

उदुम्बर विज्ञान को 'स्वराज्य' के समान जनता-हितार्थ प्रकट कर दिया है, अब इसका पूर्ण प्रचार भी करें।

श्रीधन्वन्तरिरूप भगवान् (हरि) के पक्ष में भी प्रायः ऊपर लिखित अर्थ यथेष्ट है और अन्यान्य अवतारों में प्रथम आयुर्वेद के कारण आप की वन्दना अत्यावश्यक है।

विष्णु भगवान् तो प्रसिद्ध ही (हरि) हैं, एव यज्ञाङ्ग भी हैं। सत्पत्र आपके पूजोपकरण तुलसीदल आदि भी हैं, तथा हितकर गरुड़ आदि से भी जो उल्लसित रहती हैं। एवं लक्ष्मी जी भी तो प्रधानत यहीं उल्लसित रहती हैं और अर्थ प्रायः पूर्ववत् है।

श्री विष्णु भगवान् के २४ अवतार हैं। सभी के पक्ष में इसकी उल्लिखित व्याख्या ठीक है। 'हरि' नृसिंहावतार भगवान् भी, हरिद्युति धाम हैं ही एव गूलर के गुणों के प्रधान परीक्षक और उससे उपकृत और उसके संसार मे विशेष प्रचारक भी हैं। और भी अर्थ प्राय प्रकट और सुगम ही है। इसी तरह 'वाराह' भगवान् तो प्रधान 'यज्ञाङ्ग' प्रसिद्ध ही हैं। दत्तात्रेय भगवान् तो गूलरविज्ञान के प्रधान प्रवर्त्तकों में हैं। श्री रामचन्द्र जी महाराज की सत्पत्र-लक्ष्मी (बाणों में लगे हुए पत्रों (पक्षों) की शोभा) विशेष है। हरिद्युतिधाम, (हनुमान जी आदि वानरों के शोभाधाम) भी हैं। लक्ष्मण जी, भरत जी, शत्रुघ्न जी और वशिष्ठ जी आदि को भी प्रणाम है। परब्रह्म की भी इसी प्रकार वन्दना करते हैं।

श्रीशिव जी के पक्ष में वन्दना की व्याख्या इस तरह है—हरि (श्रीशिव जी) द्युतिधाम (तेज के स्थान) ही हैं एवं चन्द्रमा, सूर्य तथा अग्नि आपके नेत्र ही हैं, जिससे द्युतिधामता और बढ जाती है। [आपकी] 'हितसत्पत्र लक्ष्मी' भी उल्लसित हैं जिसका उल्लिखित अर्थ से यह भी अधिक अर्थ है कि सत्पत्र (अच्छे वाहन—वृषभ अथवा बिल्वपत्र आदि) की हितकारिणी लक्ष्मी उल्लसित है। (पत्र 'वाहन' को भी कहते हैं) (बिल्ववृक्ष के पत्र पर लक्ष्मी जी का निवास भी है जिनकी दुर्गति हो रही है) नरकयातना भोग रहे हैं। उनके दु ख हरने में भी आप प्रशंसित नाम वाले हैं। और उल्लिखित व्याख्यानुसार ही सन्ततों की क्षतिपूर्ति कर यज्ञादि का फल देना भी आपका निरन्तर काम है।

यों ही एकादश रुद्र एवम् अष्टमूर्ति महादेव की भी वन्दना है।

शिवजी के अवतार 'हरि' (वानर प्रधान) हनुमानजी को भी प्रणाम है। आप वृक्षों के सत्पत्रों मे विचरणशील भी हैं।

'हरि' ब्रह्माजी को भी प्रणाम है जो यज्ञाङ्ग भी हैं और उल्लिखितार्थ विशिष्ट भी है और जिनके सत्पत्र बहुत सुन्दर वाहन [अपने सुन्दर पक्षों से भी विभूषित हैं]

यों ही जो अग्निदेव 'हरि' तथा 'यज्ञाङ्ग' हैं उनको भी प्रणाम है जिनके विषय मे उल्लिखित व्याख्या भी यथेष्ट है, जिनके तीन स्वरूप हैं और 'स्वाहा' आदि मन्त्राधिष्ठात्री देवी है उन्हे भी प्रणाम है।

यों ही जो 'चतुर्दश' यम भी 'हरि' और 'यज्ञाङ्ग' हैं उन्हे भी अमित प्रणाम है।

'हरि' 'यज्ञाङ्ग' सर्पराज को भी प्रणाम है जिनके कर्कोटक, तक्षक आदि अनुयायी है।

सबसे बढकर प्रत्यक्ष देवता, आरोग्य के विधायक, ससार के सञ्चालक और स्थापक, पालक 'द्युतिधाम' मे अद्वितीय सूर्यदेव द्वादशादित्य को प्रणाम है जो दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्षादि के द्वारा भी यज्ञाङ्ग है।

हरि (हरे रग) की शोभा रखने वाले सूर्यदेव के 'हरि' 'सप्ताश्व' को भी प्रणाम है, जो उल्लिखितार्थ विशिष्ट है और अश्वमेधादि यज्ञों को सम्पूर्ण करने मे यज्ञाङ्ग भी हैं। और उच्चैःश्रवा आदि अश्वों को भी प्रणति है जो 'यज्ञाङ्ग' तथा 'हरि' हैं।

इसी रीति से सूर्यदेव के किरणों को भी प्रणाम है जो 'हरि' एव 'यज्ञाङ्ग' हैं। तथा चन्द्रमा देवता को भी प्रणाम है जो स्वयं देवप्रधान होने के अतिरिक्त श्रीशिवजी की आठ मूर्त्तियों मे एक हैं, आप 'हरि' भी है और (यज्ञाङ्ग) भी। ओषधीश और अमृत-किरण होने के कारण भी आप दुःख हरने और क्षतिपूर्ण करने मे प्रधान हैं।

मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु, केतु आदि ग्रहों को भी प्रणाम है जिनके पक्ष मे उल्लिखित अर्थ भी यथेष्ट है। एवं ध्रुव, अगस्त्य, लोपामुद्रा, सप्तर्षि, अरुन्धती तथा अश्विन्यादि २८ नक्षत्र और मेषादि १२ लग्न को भी प्रणाम है। पॉच ताराओं को भी इसी भॉति नमस्कार है।

इसी भॉति धर्म, वरुण, कुबेर, श्रीशुकदेवजी, मार्कण्डेय, सुरर्षि, भीष्मजी, द्रोणाचार्यजी आदि को भी प्रणाम है।

इसी तरह काम, कार्त्तिकेयजी, बलभद्रजी तथा विश्वेदेव (१०), वसु (८), तुषित (३६), आभास्वर (६४), वात (४९), प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, महाराजिक (२२०), दिग्गज (८), दिक्करिणी (८), साध्य (१२), विद्याधर, अप्सर , यक्ष, रक्ष , गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध, भूत (१०) को भी प्रणाम है।

यों ही दश महाविद्या, योगिनी ६४, सप्तशती (दुर्गाजी के अन्तर्गत), कल्याणी, वृद्धि, सिद्धि (८), ख्याति, कृष्णा, धूम्रा, अतिसौम्या, अतिरौद्रा, विष्णुमाया, चेतना, निद्रा, रौद्रा, नित्या, गौरी, धात्री, ज्योत्स्ना, सुखा, क्षुधा, छाया, शक्ति, तृष्णा, क्षान्ति, जाति, लज्जा, शान्ति, श्रद्धा, कान्ति, लक्ष्मी, वृत्ति, स्मृति, दया, तुष्टि, महारात्रि, कालरात्रि, मोहरात्रि, श्री, ह्री, ईश्वरी, बुद्धि, पुष्टि, शान्ति, शिवा, भद्रा, माता, भ्रान्ति, इन्द्रियाधिष्ठात्री, व्याप्ति, स्वाहा, स्वधा, वषट्, सुधा, सन्ध्या, सावित्री (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् , बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् , जगती) छन्दोदेवता, महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहा, महादेवी, महासुरी, प्रकृति, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, नारायणी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री, रुद्राणी, विन्ध्याचलवासिनी, रक्तदन्तिका, शताक्षी, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा, चामुण्डा, कार्त्तिकी तथा शोकरहिता, सङ्कटा, शीतला, एवं राधा, ललितादि, रुक्मिणी, सत्यभामादि। एवं गङ्गा, यमुना, सरस्वती, सरयू , गंडकी, कौशिकी, नर्मदा, शोण, कावेरी, गोदावरी, पञ्चनद, प्रयागादि तीर्थ, काशी आदि सप्तपुरी, जालन्धर आदि १५२ सिद्धपीठ और श्रुति, स्मृति, आदि को भी प्रणाम है, एवं पृथ्वी, जल, समुद्र, आकाश को भी सविनय प्रणाम है, तथा उदुम्बर वृक्ष, खदिर, भार्गी, आदि को भी, जो सभी यज्ञाग, हरिरूप, लोकोपकारी हैं, और सबके लिये प्रार्थना, प्रणाम सबके अर्थ में भी अभिमत है। और सबसे प्रार्थना यही है कि—

'गूलर के पत्तों से संसार की रक्षा होवे !!!'

दोहा—

सन्निधि यह यज्ञाङ्ग है सुरतरुसम सुखधाम।
सुमनसुदर्शन से विदित करे पूर्ण सब काम॥

गूलर का पेड़ भी एक अच्छा निधि ही है। संस्कृत तथा हिन्दी के साहित्य मे प्रसिद्ध नवसख्यक निधि हैं, जिनके ये नाम हैं (१) महापद्म (२) पद्म (३) शंख (४) मकर (५) कच्छप (६) मुकुन्द (७) कुन्द (८) नील (९) और खर्व। ये अलग अलग हैं, जिनका मार्कण्डेय पुराण के ६० वें अध्याय मे विशेप विवरण है, जिनकी स्वामिनी लक्ष्मी जी हैं। महापद्म और पद्म सत्त्वगुणप्रधान निधि हैं। जो ऐसे ही स्वभाववालों पर कृपा करते हैं तथा अन्य निधि रजोगुण और तमोगुण प्रधान हैं जो ऐसे स्वभाववालों पर ही कृपा करते हैं (जिन्हें पहले बुरे कामों से लाभ तथा पीछे हानि होती है)।

इनमें पद्म (श्वेत कमल) के गुण मे तो आजकल के नवशिक्षित विद्वान् भी परिचित्त हैं। २० वर्ष के लगभग हुए, प्रयाग की 'सरस्वती' नाम की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका में 'श्वेत कमल' शीर्षक एक लेख निकला था जिसका साराश यह है—

'किसी नवयुवक सिविलियन अग्रेज से एक फकीर की भेंट हो गई, साधु की गुदरी (कन्था) में एक बहुत ही छोटा सा श्वेत कमल था जो कभी कुम्हलाता नही था। इस युवक अग्रेज मे एक गुणवती कुमारी का विलायत मे विवाह होने को था पर बीच मे मनमुटाव हो गया और उसके सम्बन्ध की आशा जाती रहने से वह बहुत दुखी रहता था। 'श्वेतकमल' से इस कार्य के लिये प्रार्थना की गई जिसके द्वारा सपने में दोनों मे मेल-मिलाप हो गया और जिसका तार और सविस्तर पत्र विलायत से यहाँ आये और भारत से वहाँ भी गये। इस तरह कार्यसिद्धि हो गई।'

जिस प्रकार से प्रसिद्ध है कि 'सुरतरु' (कल्पवृक्ष) से जो वस्तु माँगी जाय वह मिल जाय, इसी भाँति इन नवसख्यक निधियों का भी काम है। जिस इष्ट पदार्थ की प्रार्थना की जाय सभी मिल जायँ, परन्तु विधिवत् आराधना चाहिये।

गूलर उत्तम निधि क्यों है?

गूलर के पेड़ों मे विचकिल (वेला) के फूल के समान फूल भी होते हैं जो सबको नहीं देख पड़ते। कभी कभी किसी भाग्यवान् को मिल जाते हैं।

विद्वच्छिरोमणि परमपदप्राप्त पण्डित नकछेदरामजी द्विवेदी के भतीजे तथा पण्डित रुद्रदत्त जी द्विवेदी के पुत्र काशीप्रवासी पं० काशीनाथ द्विवेदी, दो घण्टो के लिये ही दो फूल देख पाये, जिनके दो फल भी आपको मिले। एक आप बहुधा बीमार रहा करते थे, अब सबल नीरोग रहते हैं, दूसरा यह कि जो ग्रन्थ आपको नहीं लगते थे लगने लगे। आपने गूलर फूल के दो गुच्छों मे जो फूल देखे थे उन्हे अपनी माता-भगिनी आदि को भी दिखाया और एक बडे अनुभवी पण्डित को भी, पर किसी को वे फूल न देख पडे।

परगण्डी रियासत जिला सीतापुर में पहले एक साधारण गृहस्थ को गूलर का फूल मिला जिस के प्रभाव से आप अच्छे जमींदार हो गये। फिर एक और फूल मिला जिस से आप राजा हो गये। दोनों फूल सोने के सम्पुटों मे अब तक वहाँ रक्खे हैं।

हृदयहीनों से प्रार्थना

(छन्द हरिगीतिका)

सब दुख दयानिधि की दया से देश के कट जायँगे।
जो आ पड़े संकट निकट वे सब विकट कट जायँगे॥
उद्योग सरिताधार मे पड़ सकल भय बह जायँगे।
केवल कुटिल नरनाशकों के पाप ही रह जायँगे॥

(छन्द हरिणी)

सब कुभिपजों की भी, ईर्ष्या बढ़ी मिट जायगी।
अमित महिमा योंही, औदुम्बरी दिखलायगी॥
पर अति दुखी हो हो, जो हन्त गूलर के विना।
फिर न बहुरेंगे, वे, पा, अन्त गूलर के विना॥

वा

सुमति बहुरेगी भी, सुज्ञान भी मिल जायगा।
फिर अधमरे लोगों, में प्राण भी सर जायगा॥

पर तड़पते रोते, जो हन्त गूलर के बिना।
फिर न बहुरेंगे, वे, पा, अन्त गूलर के बिना॥

(छन्द सुन्दरी वा द्रुतविलम्बित)

नवसुधा वसुधातल में यही, छदन सत्फल के फल में यही।
सब समीहित ही हित ही लिये, मृतसमान समान गदी जिये॥

वसुधा (पृथ्वी) तल में यही (गूलर ही) नव (नई) सुधा अमृत है। इसके छदन (पत्ते) और सत्फल (अच्छे लाभ) के फल (परिणाम लाभ) में भी यही है। (क्योंकि इसके द्वारा) सब समीहित (सभी इच्छानुसार) ही हित (उपकारिता ही को लिये हुए के समान (मान = प्रतिष्ठा के सहित) मृत समान (मरणोन्मुख) गदी (रोगी) (इससे) जिये (जी गये हैं)।

यदि कहिये कि गूलर तुच्छ फल को आपने अमृत बनाकर अत्युक्ति का अन्त ही कर दिया है तो मैं अब कहता हूँ कि मुझ मे ऐसी शक्ति ही नहीं है कि गूलर का पूरा पूरा गुण-वर्णन कर सकू, केवल एक सवैया (छन्द) इस सम्बन्ध मे लिख देना मात्र मैं पर्याप्त समझता हूँ।

हो जब बाधा तुरन्त सुधा मिले,
ऐसी मिले विधि जो सुविधा की।
बाधा तुरन्त ही दूर करे,
न कलंकिता हो कहीं लाभ सुधा की॥
गूलर की उपमा हो सुधा रस,
हरे कृमि की तति भी वसुधा की।
देख पड़े वसुधा मे सुधा जब,
धार बहे वसुधा में सुधा की॥

अर्थात् जब किसी को पीड़ा (कष्ट) हो तो तुरन्त ही सुधा (अमृत) मिल जाये ऐसी सुविधा की कोई विधि मिल जाये और अमृत के मिल जाने पर भी तुरन्त ही कष्ट दूर करे और कही काम न करने का कलङ्क भी न लगे। सब

है बड़ी बात तो यह है कि अमृत मरे हुए जीवों को जिलाता है और गूलर रोग के बीज के कीड़ों को मारता है, यह कृमि नाशक गुण भी यदि अमृत में आ जाये और वसुधा (पृथ्वी) में सुधा देख पड़े और सर्वत्र ही सुधा की धारायें बह निकलें, तब गूलर के पत्र से कहीं अमृत से उपमा (समता) दी जा सकेगी।

सूत्र-स्थान

आयुर्वेद का आशय

आयु बढ़े, बल बुद्धि भी, बढ़े बढ़े आनन्द।
रोग नहीं आवे निकट, रहें सुखी स्वच्छन्द ॥
सारे आयुर्वेद को, इसीलिये है सृष्टि।
रोग-निवारण पर रही, सदा गौण ही दृष्टि ॥
सारे आयुर्वेद का, यही सकल उपदेश।
'जनता पशु सुख से रहैं सुखी रहे सब देश ॥'

आरोग्य के अतीव उपकारक उपाय

आरोग्य के लिये पाँच बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

१—ब्राह्म मुहूर्त में नित्य जाग जाना।
२—ब्राह्म मुहूर्त में उठकर धर्म और अर्थादि के लिये नित्य विचार करना।
३—प्रातः समय विशुद्ध जल पीना (उषःपान करना)।
४—प्रातः समय के स्वच्छ वायु में भ्रमण करना।
५—प्रतिदिन उचित सोने का प्रबन्ध।

१—ब्राह्म-मुहूर्त में नित्य जाग जाना

एक पहर रह जाय जब, सब ही ऋतु की रात।
उठकर ठीक करो तभी, आगे की हित-बात ॥

प्रात' प्रायः एक पहर रात रहते उठना चाहिये। उस समय का नाम है 'ब्राह्म-मुहूर्त्त'। सभी मत [मजहब] मे उसकी बड़ी प्रशंसा है, विशेपत चिकित्सा में। इसके अतिरिक्त नीति की पुस्तकों में, व्यवहार की पुस्तकों में, काव्य की पुस्तकों में, तथा हिन्दू-धर्मशास्त्रो मे भी इस समय की बड़ी प्रशसा लिखी है जो अनुभव से भी अनुकूल लाभप्रद है। अत इसी समय मे उठना चाहिये चाहे कोई ऋतु हो। पहले सोने से दो बजे भी आनन्द के साथ नींद टूट जाती है।

२—इसी ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर धर्मार्थादि के लिये विचार करना

सोचे अपने धर्म को, फिर धन को अनुकूल।
दुख शरीर के, पठन के, तत्त्व समीहित मूल॥
रचित पाँच ही तत्त्व से, है यह मानव देह।
सुख-दुख उन्नति-हानि का, मन इन्द्रिय का गेह॥

ब्राह्म-मुहूर्त मे उठने पर पहले यही विचार करना चाहिये कि सदा सुख-शान्तिकारी हमारा धर्म किसी भाँति ठीक निवहता है कि नही? यदि ठीक न होता हो तो ऐसा यत्न करना चाहिये कि वह ठीक होवे।

यह हमारी देह किस प्रकार रहेगी? यह शरीर, हम और हमारे परिवार के लोग एव पशुवर्ग भी हमारे किस भाँति नीरोग रहकर उपकारक होंगे—इस पर विशेष रूप से विचार करना चाहिये। फिर विचार करना चाहिये कि मेरी जीविका के योग्य आय [आमदनी] है कि नही? यदि है तो ऐसा उपाय करते रहे कि जिससे यह सदा बनी रहे और बढती भी रहे। और यदि नहीं है तो मन को एकाग्र करें, धीरे-धीरे अभ्यास करें तो धीरे धीरे मन की चञ्चलता भी जाती रहेगी और ठीक समझ मे आ जायगा कि आमदनी का उपकारक और सच्चा मार्ग कौन है?

धर्म के सुधरने से जीविका (रोजगार) सुधरती है और संसार के सभी काम भी सुधर जाते हैं, देह के दुख भी छूट जाते हैं और सच्चे तथा उपकारक

ज्ञान-विज्ञान का ज्ञान भी हो जाता है। फिर उपकारक पुस्तक-पाठ भी समझ में आने लगता है।

[इन सब बातों को पूरा समझने के लिए विज्ञान (साइन्स) की रीति से बड़ी पुस्तक में लिखा है] धर्म का यह अर्थ नहीं समझना चाहिये कि सिर्फ नाक दबाए रहें और कभी-कभी कोरा राम-राम या खुदा-खुदा कहा करें। धर्म का मतलब है मुनासिब तरीके से—न्याय से संसार में ऐसा भला काम करना जिनसे इस लोक में भी उन्नति और भलाई हो और परलोक में भी।

यहां हम नाक दबाने वा 'प्राणायाम' की निन्दा नहीं करते हैं, उससे भी लाभ है, 'राम-राम' 'खुदा-खुदा' कहना भी धर्म है, और उससे लाभ है, पर यही सीमित धर्म नहीं है।

इस प्रकार के धर्म से धन भी होता है, शरीर भी नीरोग रहता है। न्याय से पैदा हुए धन से धर्म भी बढता है और शरीर भी नीरोग रहता है। ठीक नीरोग शरीर रहने से धर्म बढता है और धन भी।

विद्यार्थियों का तो काम ही है पुस्तक पढना, परन्तु जो विद्यार्थी नहीं हैं उन्हें भी प्रतिदिन उल्लिखित प्रकार का धर्म, धन एवं शरीर के समुन्नतिकारी वेद, पुराण आदि पुस्तक का अध्ययन करना और उसके तत्त्वविचार से अपने चारों पदार्थों को प्राप्त करना—धर्म, धन एवं नीरोग शरीर से ही इस अध्ययन में भी सफलता होती है।

इसी समय विचारे कि शरीर में कुछ कष्ट तो नहीं है? यदि कुछ है तो उसका उचित उपचार कर आरोग्य हो जावे। आरोग्य हो जाने से ही संसार के सभी पदार्थ का और सुख का उपभोग होता है और इसीलिए इस पुस्तक की सृष्टि भी हुई है।

३—प्रातः समय विशुद्ध जल पीना

रात्रि चतुर्थ-प्रहर में, जल पीना हित-सार।
चलो जहाँ लौं सुखद हो, पैरों से सविचार॥

जल—

जल सिरजा जगदीश ने, प्रथम जीवनाधार ।
भीतर बाहर देह का, करता है उपकार ॥
सचमुच जीवन जीव का, जीवन जल सब भाँति ।
सुख जीवन इससे लहै, प्रतिदिन मानव जाति ॥

दीर्घ जीवन और आरोग्य रहने के जितने उपाय हैं उनमे एक प्रधान उपादेय उपाय यहाँ लिखते हैं—ब्राह्ममुहूर्त मे उठकर धर्मार्थ-विचार करने के बाद मुँह खूब साफकर जितना जल स्वभावत पी सकें पी लेना चाहिये। आयुर्वेद में आठ पसर पानी पीने को लिखा है। **पानी कैसा होना चाहिये ?** स्वच्छ (साफ) हो, सध्या के समय मिट्टी के साफ वर्तन मे भरकर रक्खा हो तथा उस वर्तन का मुँह कपडे से वेधा हो तो जल को गर्म कर पीवे।

जहाँ तक सम्भव हो साफ जल लेकर एक चौडे मुँह वाले मिट्टी वा धातु के वर्तन में पानी छानकर रखना चाहिये। फिर एक फिटकिरी के ढेले को साफ सूत में बाँधकर जल में पाँच-सात वार घुमा दे वा निर्मली पीसकर जल मे डाल दे वा पानी औंटकर पीना चाहिए क्योंकि पानी साफ न पीने से भयङ्कर रोगों का डर रहता है। इस प्रकार प्रात काल जलपान करने से आयुर्वेद मे लिखा है कि मनुष्य एक सौ वर्ष सुख के साथ जीता है और कोई भी रोग पास नहीं फटकते हैं। जो रहते भी है वे शान्त हो जाते हैं और अनुभव से भी यही वात सिद्ध है।

इससे दस्त साफ होते है, भूख लगती है और वात, पित्त, कफ, रक्त आदि के विकार से भी जो रोग होते है वे सब दूर हो जाते है। इसलिये बरावर पानी पीना चाहिये। कभी पीना और कभी छोड़ देना यह ठीक नहीं। परन्तु यदि किसी अनिवार्य कारण से कभी जलपान का नियम छूट भी जाय तो फिर नियमानुसार जलपान करे। जलपान का समय यद्यपि रात्रि के चौथे पहर के आरम्भ में ही है तथापि विवशता–वश पीछे दिन आने पर भी पी सकते हैं।

४—प्रातःकाल के स्वच्छ वायु में भ्रमण

इसके पीछे है सुखद, नर-जीवन का वायु।
बाहर भीतर देह के, प्राण रूप जो आयु॥
शुद्ध वायु में खैंचिये, प्रतिदिन उत्तम साँस।
जीवन हित सबसे प्रबल, शक्ति हमारे पास॥

निशान्त-जलपान के बाद समयानुकूल कुछ देर टहलना भी अत्यावश्यक है। सर्दी के दिनों में शरीर को कपड़ों से भलीभाँति ढक लेना चाहिये। इस समय की हवा प्रायः स्वच्छ और प्राणवर्द्धक होती है।

अब हमें यहाँ जनता के नीरोग रहने के विषय में विशेष कहना है। यही इस पुस्तक का प्रधान विषय है।

हम जिस हवा से सास लेते हैं, वही हमे जिलाती है। अन्न और पानी के बिना तो कई दिन जी भी सकते हैं पर सास न लें तो दो चार घड़ी भी जीना कठिन है।

शरीर के भीतर से प्राण (वायु) शरीर के विष से दूषित होकर बाहर आकाश की अमृतवायु (आक्सिजन) पाकर जल्दी से भीतर चले जाते है। इसी क्रिया को श्वास लेना कहते है।

अगर यह वायु बाहर में भी बिगड़ा हो तो इससे भी सास लेने से आदमी बीमार हो जाता है और बहुत बिगडे वायु में श्वास लेने से मनुष्य तुरत ही शरीर-त्याग भी कर देता है।

अतएव प्रात कालीन स्वच्छ वायु का सेवन कर लाभ उठाना उचित से भी अत्यन्त उचित है।

५—प्रतिदिन उचित सोने का प्रबन्ध

दिन भर परिश्रम करने के कारण जब शरीर की सारी शक्तियाँ थक जाती हैं और जब ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, मन आदि हार जाते हैं तब प्राणी को उस थकावट को दूर करने के लिये निद्रा की आवश्यकता होती है। जब भरपूर नींद आ चुकती है तब पूरा विश्राम मिलता है और थकावट दूर होती है तथा क्षीण

हुई शक्ति पूरी हो जाती है एवं थकी इन्द्रियाँ और मन भी पुन: सबल हो जाते हैं।

उल्लिखित पाँचों नियमों के अनुसार कार्य करने वाला पुरुष अवश्य नीरोग रहता है।

आगे लिखी दिन-चर्या, रात्रि-चर्या तथा आचार-विचार से और अधिक लाभ होता है।

प्रथम ही जानने योग्य

दोहा—

उचित रीति से कीजिये, औषध का व्यवहार।
होगा इस उपचार से, तभी सभी उपकार॥
आँख-दाँत के ध्यान से, विवरण पढ़ें विचार।
'विज्ञ चिकित्सक' से समझ, करें रोग परिहार॥

अर्थात् औषधों का किस प्रकार व्यवहार करने मे लाभ होता है, इस बात को भली भाँति, ध्यान से समझ लेना चाहिये। स्वयं समझ में न आवे, तो किसी अच्छे समझदार से समझ लें और जिन्हे सुभीता हो वे अच्छे हितैषी दयालु चिकित्सक (दवा करने वाले) सुजन से समझ लेवें। यद्यपि यह पुस्तिका ऐसी भाषा में लिखी गई है कि नाम मात्र की, पुरानी चाल की पढी स्त्रियाँ भी इसे समझ लेती हैं।

आवश्यक सतर्कता—

(१) यदि यह दवा खानी है तो जिस तौर से खाने को लिखा है, उसी नियम के अनुसार विना नागा खानी चाहिये।

(२) कही लेप करना है वा मलना है तो दिन-रात बराबर लेप करे। वा जैसा अब इसमे लिखा हो करना।

(३) यह लेप पतला न रहे। प्राय लेप आधा अंगुल मोटा, रहना चाहिये। यह मोटा लेप-तेल, स्वरस, सार के लिये नही, पत्तो के कल्क (चटनी सी) ही के लिये है।

(४) कल्कों के लेप सूखने न पायें, सूख जाने पर बदल देवें, न बदल सकें तो जल से भिगो देवें।

(५) जिस घाव या व्रण में कील-कांटे आदि भीतर हों उन्हें निकाल कर लेप करना चाहिये। पीब को भी साफ कर देवें। सड़े मांस को भी निकाल देवें।

(६) जिन रोगों के कारण घाव आदि हों उन प्रधान रोगों की भीतर खाने की दवा भी साथ ही साथ होने से लाभ होगा। जैसे—'फिरङ्ग' रोग (सिफलिस) के घाव पर भीतर खाने की भी दवा होनी चाहिये। इससे पूर्ण और स्थायी लाभ होगा।

(७) कुसंयम (बदपरहेजी) और अधिक परिश्रम से भी उपकार नहीं सा होता है।

(८) आँख तथा दाँत के रोगों में लिखी टिप्पणी ध्यान से देखें और तदनुसार भली भाँति विचार कर व्यवहार करें।

(९) इस अतीव उपकारक 'आरोग्य-प्रकाश' से लाभ उठाने के इच्छुक आदरणीय सज्जनों और विशेषतः दयालु चिकित्सकों से और अध्यापकों से सविनय निवेदन है कि कृपाकर वे खुद विचार कर इसकी जाँच कर लेवें। राजर्षि दधीचि ने इन्द्र के प्रार्थना करने पर संसार के हितार्थ अपनी हड्डी दे दी, यह समझ कर भी कि मैं मर जाऊँगा। फिर इसकी जाँच कर संसार के तथा निज हित के लिये भी आपको एक-आध मिनट मात्र हल्का कष्ट होगा। एक छुरी या सूई से जाँघ आदि में कहीं थोड़ा छेद कर दीजिये कि लोहू निकल आवे, फिर दूसरे हाथ में पिसे हुए गूलर के पत्तों का रस उस पर मलते जाइये तुरत ही तीन क्रियायें विचित्र होंगी। १ कटने का सारा कष्ट जाता रहेगा, २ लोहू बहना बन्द हो जायगा, और ३ लोहू का लाल रंग मिट्टी का सा मटमैला हो जायगा। इस प्रकार के कटने आदि में यदि उचित उपचार वा उपाय न किया जाय तो सेप्टिक तक हो सकता है, और एक मेरा परिचित विद्यार्थी श्री काशीजी में लोकान्तरित भी हो चुका है जिसकी डाक्टरी आदि सभी चिकित्सायें हुईं पर व्यर्थ हुईं। यह उदाहरण मैंने एक साधारण व्रण का दिया है, ये औषध भयंकर

व्रण मे भी प्राण बचाते हैं जहाँ और सब दवायें व्यर्थ हो जाती हैं। इसी प्रकार दियासलाई से कहीं थोड़ा शरीर जला लीजिये और तुरत ही गूलरपत्र-रस मलकर सानन्द हो जाइए। फिर इसी प्रकार दुर्घटनावश भयंकर आग से जलने में भी रक्षा कीजिये। गूलर के पत्तो मे यदि केवल यही दो गुण रहे और कुछ भी नही, तब भी अपने काम मे यह अद्वितीय सफल है, आसान भी है। फिर आँख आदि की पीड़ाओं मे और विविध रोगों मे अद्वितीय लाभ कर, यह सद्य' प्राण-रक्षा करता है—यह घलुये में।

(१०) पशुओं का गूलर-पत्र प्रधान भोजन भी है। उन्हे २०) रुपये भर वा और अधिक खिलाइये, जहाँ तक उपकार देख पडे।

(११) एक अगुल मोटा लेप घाव आदि में लगाइये।

विशेष नियम—

सभी समर्थ लोगों को अपने घर के समीप गूलर के पौधे, गमले मे लगा देना चाहिये और गूमा, चीता, चन्द्रगुपा आदि के भी। विशेषतः स्कूल और पाठशालाओं के अध्यापकों को। फिर जब जरूरत हुई, काम लिया जा सकता है।

काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के 'सर सुन्दरलाल अस्पताल' मे आयुर्वेद विभाग में भी सब ओषधियों से अधिक सफलता से और अधिक रोगों में गूलर-पत्र वा सार ही का व्यवहार हो रहा है। कलकत्ते के भुवनविदित कविराज गणनाथ सेन सरस्वती एम० ए० एल० एम० एस० के आयुर्वेद कालेज के एम० डी० आदि डाक्टर लोग भी इसी से पूरा काम ले रहे हैं। और कलकत्ता आदि प्रधान नगरों में भी इसका खूब व्यवहार है। श्री मालवीयजी तथा श्री गणनाथ सेन सरस्वती आदि के पत्र अन्यत्र छपे हैं।

(२)

पानक

वा

गूलर के पत्तों का शर्बत

(बनाने का विधान)

(छन्द-बरवा)

चावल अरवा लेवे तोले चार ।
तिगुने जल में भेवें, इसे विचार ॥
गूलर के लें पत्ते तोले चार ।
धोवें स्वच्छ सलिल से, शुद्ध विचार ॥
इसी तण्डुलोदक से, गूलरपत्र ।
पीसें छान पिलावे, विधि सर्वत्र ॥
मैंने रक्खा इसका पानक नाम ।
जहाँ लिखा है लेवें, समुचित काम ॥

दोहा—

दस्त न होवे, साफ यदि तो रेंडी का मूल ।
पीसे गूलर-पत्र में, तोले भर अनुकूल ॥
अथवा त्रिवृतामूल भी, दो मासे दें आप ।
शुद्ध दस्त होगा मिटा, सब मल का उतपात ॥

अथवा मिला हरीतकी, का को देवें चूर्ण।
आधा तोला, लाभ भी, तब भी होगा पूर्ण ॥
दाख तीन भर दीजिये, यदि 'पानक' में आप।
सबल करेगा हृदय को, हर कर मल परिताप ॥
मिश्री भी यदि दीजिये, इसमें तोले तीन।
स्वाद तथा सन्तुष्टि में, देगा भाव नवीन ॥
दूध अगर दे दीजिये, इसमें तोले पांच।
वस्तिशुद्धि होगी अधिक, बल होगा, लें जांच ॥

पानक यों बनाइये—

अरवा चावल कुछ छरवडा कर चार तोले, पानी बारह तोले में एक या दो घण्टे तक भिगो कर उसे छान कर पानी ले लेवें और चार तोले गूलर के पत्ते को साफ सिल पर दो तोले मिश्री के साथ पीस कर छान लेवें, यह 'पानक' है।

परन्तु यदि दस्त साफ न हो तो गूलर के पत्तों के साथ ही रेंडी (एरण्ड) की जड़ की छाल एक तोला मिला कर पी जावें, इतनी मात्रा से दस्त कहीं अधिक हों तो रेंडी की जड़ की मात्रा कम कर देना। अथवा जिन्हे रेंडी की जड़ का सुभीता न हो, वे 'त्रिवृता' की जड़ ही ≈) आने भर गूलर के पत्तों के साथ पीस कर पीवें। इसी सुखाई हुई 'त्रिवृता' को हिन्दी पुस्तकों में 'निशोथ' कहते हैं। परन्तु पसारियों के यहाँ यह प्राय नकली मिलती है। कलकत्ते के बंगाली वैद्यों [कविराजों] के यहाँ 'पटनाही तेउड़ी' के नाम से यह प्रसिद्ध है और कदाचित् पटने में ठीक मिलती है। यह बड़ी ही उपकारिणी महौषधि है।

अथवा गूलर के पानक में ॥) भर हरीतकी (हर्रे) का चूर्ण भी मिलाकर पीवें।

(क) बहुमूत्र मे चावल के धोवन से 'पानक' न बनावें। तक्र (मट्ठे) में गूलर के पत्ते पीस डालिये और पीजिये।

(ख) हृद्रोग (छाती धड़कने), चक्कर आने, रक्तपित्त आदि रोगों में जवासा ॥) भर, ताजा साफ दाख (आवजूस) २ तोले, कुछ दूध भी मिलाकर पीवें।

सतर्कता—इन दस्तावर दवाओं को 'पानक' में इतनी मात्रा में मिलाना चाहिये कि लगभग तीन दस्त होवें।

इसमें दूब और चावल का धोवन और जवासा, मुनक्का आदि के सयोग से वृक्क (गुर्दे वा किडनी) की क्रिया में विशेष लाभ पहुँचाता है, पेशाब खुल कर साफ होता है और मूत्रकृच्छ्र में लाभ पहुँचता है।

गूलर-पत्र-वटी

दोहा—

स्वच्छ उदुम्बर पत्र को, स्वच्छ शिला पर आप।
पीस, धरें वटिका सुखा, दिखा घाम वा ताप॥
जहां नहीं टटके मिलें, यदि गूलर के पत्र।
वहाँ वटी वा चूर्ण से, काम करें सर्वत्र॥
यदि गूलर के पत्र का, आप बना लें चूर्ण।
चार भावना(१)स्वरस(२)की, फिर देवें परिपूर्ण॥
इसकी 'पर्पटिका वटी' चूर्ण अनेक प्रकार।
बना सुखा यदि काम लें, होगा अति उपकार॥
साधन कुछ न मिले कहीं शिल आदिक भी यन्त्र।
धीरे-धीरे चाब कर, खा जावें तब पत्र॥
मुख रोगों मे चाबते, रक्खें मुख में पत्र।
जहाँ-जहाँ हो व्रण (३) वहाँ पत्र रहे सर्वत्र॥

दोहों का अर्थ सरल है, तथापि सुगमता के लिये कुछ लिख देते है। साफ स्वच्छ गूलर के पत्रो को साफ सिल पर पीसकर, वटी बना लें, और घाम में खूब सुखा लेवें, घाम न मिल सके तो उसे मन्द २ अग्नि के घाम ही ऐसे ताप से सुखाकर एक शीशी में भर (डाट लगा) कर धर देवें। यों ही गूलर के

(१) भिगोकर। (२) गूलर के ही पत्ते का रस। (३) घाव।

पत्तों का रस निकाल काँच की नड़ी छोपियों से रस घाम में सुखावें। इससे वटी से भी अच्छा काम होगा।

जहाँ गूलर के टटके पत्र न मिलें वहाँ इनसे काम लेवें।

हृदय का स्पन्दन वा छाती का धड़कना—

(चौपाई)

आप तुरत उसमें सुख देवें। हृदयस्पन्दन जो दुख देवे।
मिश्री-मिश्रित गूलर-दुग्ध। दे आनन्द करें सुखमुग्ध॥

गूलर का ५ बूँद दूध मिश्री से मिलाकर चाट जाना। दूध भी ऊपर से पीना, पथ्य से रहना।

यकृत् (लीवर) का शूल, अम्लपित्त

दोहा—

विकृत यकृत के शूल भी, अम्लपित्त के रोग।
परिणामादिक शूल का, हितकर यही प्रयोग॥

अम्लपित्त के रोग में, विगड़े हुए कलेजे (लीवर) तथा और प्रकार के शूल होते हैं, खट्टा डकार आता है और कभी-कभी कै भी हो जाती है।

अम्लपित्त अथवा उदर शूल के रोगी को किसी प्रकार की दाल नहीं खानी चाहिये। यकृत् के शूल (कलेजे के दर्द) वालों को घी, तेल भी नहीं खाना चाहिये। केवल 'अम्लपित्त' से शूल न हो तो मूंग का जूस खाना अच्छा है।

दस्त साफ न हो तो 'पानक' के साथ एक तोले रेंड़ की सोर (जड़) पीस छानकर पीना चाहिये, यदि रेंड़ न मिले तो निसोथ ≈) भर वा हरीतकी-चूर्ण (हर्रे का चूर्ण) वा सनाय ।) भर ही देकर पेट साफ कर लेना चाहिये। दर्द की जगह पर गूलर के पत्ते पीसकर सविधि छोपना और मलना भी चाहिये और सेंकना भी। दर्द छूटने में देर हो तो एक-एक घण्टे पर फिर यही दवा देनी चाहिये, दो तोले रेंड़ी का तेल भी एक बार पानक में मिलाकर पिला देवें। दर्द की जगह पर सेंकना तथा पट्टी का बाँधना न भूलें।

तुरत, अन्न के न पचने से जो दर्द हो तो गर्म-गर्म प्रा पानी पीकर मुह में अंगुली डालकर, कै कर लेने से लाभ होगा। मरिच ≈) भर, हरीतकीचूर्ण

॥) भर, सेंधा नमक ≈) भर, गर्म पानी से खाकर अन्न पचा लेना भी आवश्यक है।

भोजन के बाद प्रातः तीन चार घण्टों पर जो शूल (परिणाम शूल के नाम का) होता है उसमें भोजन के आधा घण्टा पहले भी एक मात्रा औषध का सेवन कर लेना चाहिये। और सभी प्रकार के उदरशूलों की यही चिकित्सा है।

ग्रहणी अतीसार

दोहा—

अतीसार का है यहीं, ठीक चिकित्सासार।
ग्रहणी में भी देखिये, इसका अति उपकार॥
रोग छूटने में कहीं, हो यदि अधिक विलम्ब।
तब पिचकारी का शरण ले हितकर अवलम्ब॥

हिन्दी में जिसे 'वायपेच' कहते है, उर्दू मे 'पेचिस' और संस्कृत में ग्रहणी, डाक्टरी मे 'स्कू', यह प्रायः एक ही रोग है एवं प्रायः पेट और कलेजे के बिगाड़ से होता है। इसमे भूख ठीक नही लगती, दस्त बार-बार होता है। और खुल कर नहीं होता है। किसी-किसी का पेट एक दो दिन फूला रहता है और एक दिन झरता है। क्रमशः शरीर दुबला और प्रायः पीला होता जाता है और जॉघ तथा पैरों मे चलने-फिरने का बल कम हो जाता है और आगे बढकर पाण्डुज्वर भी आ घेरते हैं वा डाक्टरों की रक्तहीनता (एनेमिया) और सूतिका रोग (स्कू) भी।

'अतीसार' अधिक दस्त होने को कहते हैं।

पेचिस मे, तक्र (मट्ठा) के सहित तीन बार गूलर के पत्ते का 'पानक' पीना अर्थात् गूलर के पत्र ४ भर, मरिच २ दाने थोडे चावल के धोवन मे चटनी के समान पीस डालना, उसमें थोड़ा काला नमक और १० रुपये भर माठा या इच्छानुसार न्यूनाधिक भी माठा डाल कर साफ कपडे से छाने, छानते समय कपडे में, जिसमे कि पानक छन जा सके; हाथ डाल रगड़-रगड़ कर छाने। ऐसा करने से 'पानक' में जो गाढ़ी चीजें रहेंगी नीचे गिर जायेंगी। जिससे विशेष लाभ होगा पर पानी के से पतले रस से भी लाभ ही होता है। इसे प्रातः,

दोपहर, सायं तीन वार पीना। यदि पेट फूला हो या दो तीन दिन में लाभ न हो तो दो तोले या आवश्यकतानुसार अधिक रेंड़ी का तेल भी 'पानक' में मिलाकर पीना। •पथ्य भोजन—बीज निकाले गूलर फल की तरकारी, यदि गूलर के फल न मिलें, तो नर्म-नर्म पत्तों को पीसकर, आग पर छौंकना, अन्दाज से मरिच, नमक आदि देकर उतार लेना, पीछे मट्ठा (तक्र) देकर पतली कढी बना लेना। भात के साथ खाना। रात में तक्र (मट्ठा) नहीं खाना। मट्ठे की जगह दूध से काम लेना। दूध के साथ नमक न देना। अतीसार में हैजे के ऐसा उपचार करना। शोथ हो गया हो तो नमक, पानी छोड़ देना, दूध भात ही खाना।

उल्लिखित दोनों रोगों के आराम होने में यदि विलम्ब होने लगे तो ४० रुपये से ६० रुपये भर तक जल में आधा पाव गूलर के पत्ते पीस डालें और छान कर आग पर खौला दें फिर मन्दोष्ण २ इसमें पिचकारी (वस्ति) का प्रयोग करें, सिरीज के द्वारा या 'डूस' के द्वारा। चाहे तो कभी-कभी आवश्यकता देख इसमें २ या १ रुपये भर रेंड़ी का तेल भी दे दें।

मन्दाग्नि

दोहा—

अग्नि कहीं जो मन्द हो, तब भी इसका चूर्ण।
तक्र सहित जो खाइये, समझ अवस्था पूर्ण॥
नोन, मिरिच, मिश्री कहीं, है इसका अनुपान।
समझ समझ सेवन करें सब आरोग्य-विधान॥
मिरिच, नोन, काला तथा देवें चित्रक चूर्ण।
तक्र सहित तो लाभ भी इससे होगा पूर्ण॥
अग्निमन्द ग्रहणी विकृति, अतीसार का रोग।
इनके लिये विचित्र ही, है यह चित्रक योग॥
थोड़ा सोडा खाइये, सौंफ मिरिच के साथ।
कर देंगे उपकार इन, रोगों में श्रीनाथ॥

(चौपाई)

गूलर के फल की तरकारी।
है लपसी निमकी उपकारी॥
इसका सेवन जो नित होवे।
सबका दिन दिन अतिहित होवे॥

मन्दाग्नि—बदहजमी में भी दो या तीन बार पानक पीना चाहिये। जिस प्रकार पेचिस (ग्रहणी) में लिखा है।

गूलर के छोटे २ फलों के बीज निकाल कर तरकारी खाइये, और दाल में केवल मसूर और मूँग का जूस भर खायें, तेल घी न खायें तथा भारी पदार्थ भी न खायें। मेरे अनुभव में 'लवणभास्कर' 'गन्धक-द्राव' आदि महापाचक, जितने पदार्थ हैं, उन सबसे बढ़कर इसके गुण और प्रभाव हैं। आज १९२५ से मैं गूलर के फल की तरकारी खा रहा हूँ। मेरी घोर मन्दाग्नि को इसी ने हटाया है, जब कि सब प्रकार के औषध और चिकित्सायें व्यर्थ हो गई थीं। आज एकासी वर्ष की अवस्था में भी अग्निवल ठीक है।

गूलर के फल की निमकी भी बनती है, जैसे कि कागजी नीबू की बनती है। किन्तु उसमें नीबू या आँवले का रस देना पड़ता है या सिर्का यह एक प्रकार का अचार हो जाता है। इसकी लपसी भी स्वादिष्ट और उपकारिणी होती है। लपसी यों बनाइये:—

गूलर के फल को बीज निकाल कर आग पर उबाल कर सिल पर पीस दीजिये, थोड़ा घी, जीरा, इलायची आदि से छौंक दीजिए और चला २ कर भूँजिये फिर अन्दाज से मिश्री या चीनी दे दीजिये, दूध हो तो वह भी दीजिये। कुछ पतला रहे उतार कर खाइये, दूध की जगह मट्ठा और नमक दीजिये तो और भी लाभ होगा।

मरिच १ भर, काला नमक १ भर, चित्त (चीते) की जड़ की छाल का चूर्ण १ भर, इन सबों का चूर्ण इकट्ठे कर ५ से १० रत्ती तक मट्ठा (तक्र) से खाने में भी पेचिस, मन्दाग्नि छूटते हैं। तथा सोडा २ भर, सौंफ १ भर मरिच ।) भर का चूर्ण बना कर ।) भर वा ।।) भर जल से खावे इससे भी उपकार होता है।

हैजा (कालरा)

दोहा—

हैजा के आरम्भ में, 'पानक' का उपयोग।
वटी, पत्र का योग भी, है अतीव सुखयोग॥

अर्थात्—

टटके गूलर-पत्र भी ले लें तोले तीन।
चावल धोवन में इसे, पीसे मलें महीन॥
चीनी तोला एक दे पी जायें प्रतिवार।
दस्त वमन मिट जायंगे, पायेंगे उपकार॥
जब जब होवे दस्त, कै, तब तब मात्रा एक।
'पानक' दे वा चूर्ण ही, देखें लाभ अनेक॥

दोहो के अर्थ स्पष्ट है। हैजा व कालरा एक प्रसिद्ध रोग है, जिसे सब कोई जानते है। इसके आरम्भ मे गूलर के पत्ते ३ रुपये भर, चावल के धोवन में, पानक की रीति से पीस कर, छान कर, थोड़ी मिश्री देकर प्रत्येक कै और दस्त पर पिलाते जाना। वटी, पर्पटी भी दे सकेंगे, सार भी।

दोहा—हीङ्ग, अफीम, कपूर की, वटी बना लें आप।
कहीं करेगा शान्त कुछ, हैजे का उपताप॥

मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती तक।

पथ्य—गूलर के फलों का पतला जूस, मिश्री, दही का पानी वा चावल का धोवन, जैसा कि अवसर होवे, बहुत हल्का पतला, थोड़ा २ देवें। याद रहे कि—हैजे मे यह हल्का पथ्य भी दो दिनो पर थोड़ा ही थोड़ा देना।

रक्तपित्त

दोहा—यदि मुँह से लोहू गिरे, रक्तपित्त यह रोग।
तण्डुल जल मिश्री सहित, हो पानक का योग॥

रक्तपित्त रोग भी प्रसिद्ध है, इस रोग में मुंह से लोहू गिरता है और पेशाव आदि के मार्ग से भी। इसमें लिखी रीति से, चावल के धोवन से गूलर के पत्ते पीस छान कर प्रातः; दोपहर और सायं को भी पी जाना। सम्भव हो तो इससे बकरी या गाय का दूध खौलाकर ठण्ढा कर दे देना। यदि जवासा भी ॥) भर, और मुनक्के (आवजूस) दो चार भर देदें तो और अच्छा।

बीमारी तेज हो तो तीन-तीन या दो-दो घण्टे पर भी यों ही दवा देते जावें।

प्रधान पथ्य—दूध-भात, गूलर की तरकारी, अनार, अङ्गूर, मिश्री आदि। नोन, खटाई, मिर्चा, तेल, आलू आदि हाथ से भी न छूना।

उदरशूल, जलोदर

दोहा—

उदरशूल बहु भाँति के, हों परिणामज-शूल।
इसी चिकित्सा से सभी, होते हैं निर्मूल॥
मात्रा रत्ती तीस से, दो तोला पर्यन्त।
देवें जल में पीस कर, पीड़ा हरे अनन्त॥
दस्त नहीं जो साफ हो, तो हर्रे का चूर्ण।
आधा तोला दीजिये, देख अवस्था पूर्ण॥
यदि रेंड़ी का तेल ही, उचित पिला दें आप।
तुरत हरेगा शूल का, सब विधि से उपताप॥

यहाँ पर उचित पद से यह अर्थ समझना चाहिये कि—यदि १॥ भर रेंडी का तेल पीने से दस्त न हो तो २ या २॥ भर या और भी आवश्यकता के अनुसार पी लेवें।

इस रोग की भी चिकित्सा वही होनी चाहिये जो अम्लपित्त और यकृत् के शूल में लिखी है।

परिणामज—शूल में भोजन के १॥ घण्टे पहले एक मात्रा 'पानक' पी लेवें। विशेष बिगडे हुए यकृत् से जलोदर वा शोथ हो अथवा अन्य प्रकार से भी,

तो किसी अनुभवी सिद्धहस्त वैद्य के द्वारा इसके साथ-साथ 'पुनर्नवादि मण्डूर' का सेवन ५ रत्ती से लेकर धीरे-धीरे जहाँ तक अधिक मात्रा में उपकार दीख पडे—एक तोले वा दो या इससे अधिक भी देवें, जलोदर में पुनर्नवादि मण्डूर के साथ 'शार्ङ्गधरोक्त' पुनर्नवादि काढा भी देना अत्यावश्यक है। इसमें निमक, पानी छोड़ कर दूध भात ही खिलाना ठीक है। या दूध औटते समय गूलर के पत्ते २ रुपये भर, जेठी मधु ॥) भर और दूध का दूना पानी भी देकर औंटे, दूध रह जाय तो उतार कर छान कर व्यवहार करें। यदि जलोदर के साथ ज्वर भी हो तो आधी रत्ती मात्रा के लगभग पुनर्नवादिमण्डूर मे, 'हरताल' का भस्म भी मिला ले अथवा उड़ाया हुआ शङ्खिया का भस्म भी दो सरसों बराबर मिला कर सेवन करे अथवा समय देखकर ज्वर के चढ़ने के २ घण्टे पहले ही मधु के साथ अलग ही इसका सेवन करा दे, जिससे संसार में असाध्य रोगों मे प्रधान जलोदर रोग भी जड़ से नष्ट हो जावे।

खाँसी

दोहा—

जेठीमधु के चूर्ण में, पत्रों के सम चूर्ण।
मिला चाटिये मधुसहित, लाभ देखिये पूर्ण ॥
जेठीमधु के साथ में, यदि होवे गुण पूर्ण।
चूर्ण बहेरे का हरे, कास-कष्ट को तूर्ण ॥
यदि हर्रे का दीजिये, इसमें चूरन आप।
कास तुरत मिट जायगा, सब पूरन परिताप ॥
अलग अलग ये है यदपि, औषध तीन प्रकार।
सभी मिलें यदि एक में, करें अधिक उपकार ॥
इनकी गोली यदि बना, मुँह में रखकर आप।
रस चूसें, इसका तुरत, छूटेगा उपताप ॥

जेठीमधु वा मुलहठी बाजारों में मिलती है, इसे धोकर साफ कर सुखा कर चूर्ण बना लीजिये। ४ तोले जेठी मधु रहे तो गूलर के पत्तों का चूर्ण भी ४ तोले हो। इनकी गोलियाँ बना कर सुखा कर धर दीजिये। इसे मुँह में रख रस चूसें। इसी भाँति जेठीमधु न देकर बहेरे के चूर्ण से ही वटी बना लें वा इन तीनों औषधों के बराबर गूलर-पत्र भी मिला लें तो अधिक उपकार होगा। अर्थात् जेठीमधु, बहेरा, हर्रा २ तोले, गूलर-पत्र २ तोले देकर वटी बना लें।

यक्ष्मा

दोहा—

यक्ष्मा में औषध यही, करता है उपकार।
पानक हो, फल पथ्य हो, सेवन करे विचार॥
जो जल्दी से चाहिये, यक्ष्मा हटे तुरन्त।
सिद्ध वैद्य के हाथ मे, देवें इसे तुरन्त॥

यक्ष्मा के कारण गिल्टियाँ और कण्ठ की गिल्टियाँ और कण्ठमाला

(छन्द चौपदा)

रोग यक्ष्मा के कारण कड़ी,
ज्वरप्रद होती छोटी बड़ी।
गिल्टियाँ हैं होती दुखद हो,
गले में आगे पीछे कहीं।
धरें इस पर भी कल्क-सुधार,
करें सब पीड़ा का परिहार।
गिल्टियाँ हैं जो विविध प्रकार,
सभी का यही ठीक प्रतिकार।

[छन्द हरिगीतिका]

सर्वाङ्गसुन्दर रस, मृगाङ्क-रसादि पानक सहित दें।
दें पथ्य में अधिकांश गूलर-फल, अजापय सहित दें॥
यदि हों समर्थ- समुद्र का तो वायु-सेवन कीजिये।
सिमलादि पर्वत- देवदारु-समीर का सुख लीजिये॥

यक्ष्मा होते ही किसी सिद्धहस्त अनुभवी चतुर चिकित्सक के हाथों में रोगी को दे दें। यक्ष्मा रोगों में प्रसिद्ध और बहुत ही कठिन रोग है। इसीलिये इसकी चिकित्सा भी कठिन और खर्चीली है। दीन-दुखियों में, गूलर-चिकित्सा से लाभ होता है। कई रोगी बड़े-बड़े अस्पतालों की दवा से हार कर, केवल गूलर-चिकित्सा से लाभ उठाये हैं, जो यों है :—

गूलर के पत्ते ४) रुपये भर। जेठीमधु ।) आने भर।

दाख वा (आबजूस) ३ तीन रुपये भर।

इन्हें धोकर साफ कर साफ सिल पर चावल के धोवन से महीन पीसना, फिर इसमें १२ रुपये भर और चावल का धोवन मिला कर साफ कपड़े से छान लेवें। यदि निरोगी स्त्री का दूध मिले, तो १० रुपये भर उसी दूध से चावल भिगो कर छान लेना, उक्त दूध न मिले तो बकरी का दूध देना, वह भी न मिले तो गाय का दूध देना। फिर आग पर खौला कर जब पीने लायक गुनगुना हो तो पी जाना। (गूलरपत्र से अलग दूध खौलाना पीछे मिला लेना।)

प्रात, दोपहर, सांय और ९ बजे रात, इसी भाँति इसे ४ बार देना।

यथा लाभ—इनके साथ यदि मिल सके तो शृङ्गाराभ्ररस १ रत्ती से दो रत्ती तक मधु से चाट कर ऊपर से पानक पीना अथवा शृङ्गाराभ्र के साथ एक वा दो सरसों 'सुवर्णभस्म' भी देना, अवसर देख कर सुवर्णभस्म १ रत्ती तक दे सकते हैं। छाती में कफ जमा हो, न गिरता हो तो शृङ्गाराभ्र के साथ १ से दो रत्ती तक नवसादर भी देवें। ऊपर लिखी दवाएं चढ़े हुए ज्वर में भी दे सकते हैं, परन्तु जब ज्वर उतरा रहे तो शृङ्गाराभ्र की मात्रा आधी कम कर देना, और 'मकरध्वज' आधी रत्ती से दो रत्ती तक एक मात्रा में दे सकते हैं। पर पहले आधी रत्ती से आरम्भ करना चाहिये।

यदि मकरध्वज न मिल सके तो हरिताल-भस्म की मात्रा धीरे-धीरे २ रत्ती तक बढा सकते हैं। यदि मिल सके तो प्रात ऊपर लिखी हुई दवा की जगह 'मृगाङ्करस' वा 'जयमङ्गलरस' देना। ११ बजे 'सर्वाङ्गसुन्दररस' देना। अनुपान ठीक 'पानक' ही रहे। यदि साधारण गोदन्ती हरिताल की भस्म भी हो तव भी काम चलेगा, गिल्टियों पर निरन्तर नियमानुसार गूलर के पत्ते का लेप रहना चाहिये, जो सखे नही, गर्म रहे।

अश्मरी, मूत्राघात

[मूत्राघात (स्ट्रिक्चर), पूयमेह (सुजाक), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, मधुमेह (डायविटीज)]

दोहा

होवे मूत्राघात (१) जो, तुरत दीजिये पत्र।

---

(१) गोरखुल का ताजा व सूखा पञ्चाङ्ग २८ गडा भर को छगुने पानी में औटिये अथवा पंचाग नही मिलने पर खाली गोरखुल के फल को कूट कर औटिये। जव आधा जल रह जाय तव उतार करके छान लीजिये उसमे शुद्ध गुग्गुल सात गडा भर दीजिये (गुग्गुल यों शुद्ध कीजिये—वढिया भैंसा गुग्गुल, (जो प्रायः पसारियों के यहाँ मिलता है) को अठगुने पानी मे दीजिये, गुग्गुल के चौथाई त्रिफला (आँवला, हर्रा वहेरा) भी दीजिये और धीरे-धीरे औटाते जाइये, चलाते जाइये। जव सव गुग्गुल गल कर दूध जैसा हो जाय, तब उसे साफ कपडे में छानिये, अथवा वहुत महीन चलनी में छानिये। और नीचे कंकड़ मिट्टी जो कुछ हो छोड़ दीजिये और इसे धीरे २ गाढा कर दीजिये। यह गुग्गुल शुद्ध हो गया। इसे काम मे लाइये २८ रूपये भर गुग्गुल को गोरखुल के काढे में मिलाकर) मन्द आँच से गाढा कीजिये जव करछुल मे सटने लायक हो तव तो उसमें आगे लिखी हुई चीजें छोड़िये।

सोठ, पीपर, मरिच, आँवला, हर्रा, वहेरा, (तीनों विना गुठली के), नागर-मोथा, ये सव चार-चार भर, फिर इनको मिलाकर ५-५ रत्ती की गोलियाँ वना लेना। घाम मे सुखा कर बोतल में डाट लगा कर रख लेना चाहिये। एक गोली सुबह, एक गोली शाम औटा दूध से खाना चाहिये। सुजाक और मूत्राघात आदि

यों ही पानक दीजिये, सुख होगा सर्वत्र ॥
यों ही जो सूजाक हो, पूयमेह के कष्ट ।
पिचकारी भी दें, करें, इन रोगों को नष्ट ॥
खायें भी इसको सविधि, मासे चार प्रमान ।
ऊपर का ही योग हो, रक्खें इसका ध्यान ॥
श्वेतरक्त जो प्रदर हैं यों, जो विविध प्रकार ।
उनके भी आराम का यही ठीक उपचार ॥
जो पथरी, सूजाक हो, मूत्रकृच्छ्र का कष्ट ।
गोक्षुरादि-गुग्गुल खिला, कर दें कष्ट विनष्ट ॥
मूत्रमार्ग मे स्वरस का, हो पिचकारी योग (१) ।
(२)वत्तीका, फिर पोटली,(३) का भी हो उपयोग ॥
यदि जलमेह विकार हो, वा मधुमेह विकार ।
तब भी गूलरपत्र ही करता है उपकार ॥
मात्रा मासे चार से, दो तोले पर्यन्त ।
खाये इसको तक्र(४)से, तब दुख कटे तुरन्त ॥

में लाभ होगा। कई रोगों में प्रात , दोपहर, शाम, ९ बजे रात या चार बार सेवन कीजिये और धीरे-धीरे मात्रा भी बढाते जावें ।

(१) पिचकारी की विधि—गूलर के पत्ते को जल में पीसकर रस निकाल छानकर मूत्रमार्ग में पिचकारी देना । जहाँ स्वरस न हो सके वहाँ ५० गुने जल में उदुम्वरसार को घोलकर छानकर उसी की पिचकारी लेना ।

(२) उदुम्वरसार को ऊपर के विधि से घोल कर उसमें कपडे की वत्ती वना कर भिगा कर मूत्रमार्ग में रखना ।

(३) कपडे मे उदुम्वरसार वा गूलर के पत्तों का रस लपेट कर गोली सा वना कर गर्भाशय में रखना । (४) मट्ठा ।

तक्र नहीं जिनके लिये, करता है उपकार।
वे जल से या दूध से, करें रोग-परिहार॥
यों थोड़े ही दिवस में, छूटेंगे सब रोग।
जल्द हो तो कीजिये चन्द्र-प्रभा-प्रयोग॥
दो मासे से चार तक, पत्रचूर्ण (१) का योग।
मकरध्वज का भी करें, चाहें कुछ उपयोग॥
गूलर का फल पथ्य हो, पानक का उपचार।
भोग सकेंगे जगत के, तभी सभी सुखसार॥

(द्रुतविलम्बित—छन्द)

प्रदर की अति भीषण मार से,
बच गईं हम गूलर-सार से।
कल मिली सुखशान्ति मिली यही,
युवतियाँ बतिया बतियाँ रहीं।

मूत्रातीसार (बहुमूत्र, जलमेह, डाइबिटीज) में—

चार रुपये भर गूलर के टटके पत्ते साफ सिल पर चटनी सा पीस डालें। उन्हें चार पाँच रुपये भर तक मट्ठे वा दही मे रगड़ कर, चलनी या महीन कपडे से छान लें। दही हो तो उसमें थोड़ा जल भी मिला कर रगड़ें। इस भाँति प्रात:, दोपहर और सन्ध्या ३ बार पी जाए। मट्ठा वा दही न मिले तो यों ही पी जाना। टटके पत्ते न मिलें तो आठ आने भर से, २ रुपये भर तक, गूलर पत्रवटी खाकर मट्ठा पीलें, न मिले तो जल ही। और बहुत जल्द आराम करने के लिये, जो समर्थ हों तो 'महाचन्द्रप्रभावटी' का भी इसके साथ दो रत्ती से ४ रत्ती तक सेवन करें। बहुत ही दुर्वलता आ गई हो तो आधी रत्ती से १ रत्ती तक मकरध्वज भी मधु और 'महाचन्द्रप्रभावटी' के साथ चाटें। मकरध्वज

(१) गूलर के पत्ते सुखाकर कूटकर चूर्ण बनाकर काम में लाना।

'महाचन्द्रप्रभावटी' आदि के सेवन के समय यदि दो बार ही दवा खाने से लाभ हो तो तीन बार न खायें।

ज्वर, (पुराना, नया, बिगड़ा) जूड़ी, तिजरा, निमोनिया, हाँफा-डाँफा-पाँजर मारना, चौथिया, काला ज्वर, प्लेग तथा मलेरिया, आदि में

दोहा—

चूरन इसके पत्र के मधु से मासे तीन।
चाट जाइये पीजिये पानक सविधि नवीन॥
देवें सभी प्रकार के, ज्वर में इसको आप।
धीरे से मिट जायँगे, सब शरीर के ताप॥
नये-पुराने ज्वर विकृत(१)जूड़ी तिजरा ताप।
श्वसनक(२)सर्दी आदिमें रक्षक जानें आप॥
हाँफा—डाँफा चौथिया, हो काला आजार।
फिर मलेरिया प्लेग विप, दूषित विविध प्रकार॥

प्लेग (ताऊन)

शैर—

अगर जो प्लेग की गिल्टी कहीं हो।
पिसे गूलर के पत्ते छाप ही दो॥
पिला दो गर्म पानक आठ दश बार।
जिला दो रोगियों का कर सदुपचार॥

एक पुराने, ५-६ मास के मलेरिया ज्वर, शोथ आदि से पीड़ित जीवन मे निराश रोगी मेरे यहाँ चिकित्सा के लिये आया। इसके पहले यह डाक्टर तथा मेरे यहाँ की सब चिकित्सा कर हार गया था। मैंने भी विवश हो

(१) विकृत = बिगड़ा हुआ। (२) श्वसनक (निमोनिया)।

इस पर पानक का प्रयोग किया और दो तीन दिनों में उसे आराम हो गया, किन्तु औषधि महीनो करता रहा।

इन्हीं दिनों त्रिवेणी से एक साधु सेवक-सहित आये। सेवक पुराने ज्वर से पीड़ित था। वह भी इसी से अच्छा हुआ और एक निमोनिया वाला रोगी भी इसीसे अच्छा हो गया।

यह चिकित्सा नई है, इसलिये चिकित्सक तथा पाठकों को बहुत सावधानी से इसके व्यवहार से लाभ उठाने का यत्न करना चाहिये।

अधिकांश पुराना जूड़ी कम्प-ज्वर विशेषत आराम होता है। यों तो डाक्टरी दवा में कुनैन इसकी सबसे बड़ी दवा है, पर वह भी अनेक रोगियों में असफल हो जाता है। जिन ज्वर के रोगों में यह काम न करे वहाँ तुरत चिकित्सक डाक्टर आदि से दिखाना और यदि यकृत्, प्लीहा, फेफड़े, हृदय आदि के विकार से ज्वर रुका हो तो उनका भी उचित उपाय वा चिकित्सा भी करानी चाहिये। और दस्त साफ रखना। प्लेग में तीन-तीन घण्टे पर पानक भी देना और दस्त भी साफ रखना। गिल्टियों पर निरन्तर विधिवत् लेप भी रखना। यों ही निकसारी में जांचें।

दस्त साफ न हो तो गूलर के पत्ते ४) रु० भर के साथ ८ आने भर से १) रु० भर तक रेंड़ की जड़ मिला कर चावल के धोवन के साथ पीस छान कर पीना, अथवा हरीतकी का चूर्ण हीं।) भर मिला देना चाहिए।

सर्दी अधिक जान पड़े, या निमोनिया का रंग दिख पड़े तो उस औषधि को आग पर खौला कर धीरे-धीरे गर्म गर्म चाय के समान दो चार दिनों तक पीना चाहिए। कोई भी लाभ यदि न हो तो अच्छे डाक्टर या वैद्य के हाथ से यही वा अन्य चिकित्सा करानी चाहिये।

निकसारी (चेचक)

बरवा—

निकसारी में सारी विधि हो ठीक,
लेप, पान, रेचन, से कर दे नीक॥

कुचल जाना, छिल जाना, कट जाना, पेड़ इत्यादि ऊँचे स्थानों से गिर जाना आदि—

दोहा—

कुचले छिले शरीर यदि, कटे अनेक प्रकार।
पेड़ आदि से गिर पड़े, बहे रुधिर की धार॥
चोट लगे पीड़ा बढ़े, बेहोशी हो कष्ट।
पत्र–चिकित्सा से तुरत, होगा कष्ट विनष्ट॥
थोड़े जल में पीस कर, पत्र महीन सयत्न।
छापें पीड़ित अङ्ग पर जल्द करें प्रयत्न॥
अद्भुत् गुण देखें बड़े, इसके आप तुरन्त।
सदा परीक्षा में सफल, बाधा (१) हरे तुरन्त॥

ऊपर लिखी दुर्घटनाओं में पहले के आदेशानुसार पीसे हुए गूलर के पत्ते थोड़े जल में घोल कर लगाना और कटे आदि स्थान की अवस्था के अनुसार पानी में घोल कर रुई वा कपड़ा उसी में भिगो कर, ऊपर से दो या चार परत की पट्टी रख देनी चाहिये। उस पर गूलर या रेंड़ अथवा पान आदि के हरे पत्ते रख कर कपड़े से बाँध देना। हरे हरे पत्तों के ऊपर रख देने से बहुत बड़ा एक यह भी लाभ है कि पट्टी–जब तक पत्ते हरे रहते हैं प्रायः छः घण्टे नहीं सूखतीं। पत्ता या पट्टी के सूख जाने पर दवा फायदा नहीं करती। फिर से गीली पट्टी और हरे पत्ते उसी रीति पर ठीक कर देना चाहिये।

कुचले कहीं तुरन्त हो, कुचले छापे शान्त।
कुचलेपन से भी करे, कुचले सुखी नितान्त॥

यदि कहीं कुचल जाय वा दर्द हो, वा जहरवात हो वा गिल्टियाँ हों वहाँ कुचिले को पीस कर छापना। कुचला विष है, इससे समझ कर काम करें।

---

(१) बुरे परिणाम के।

आँखों में चोट लगना, घाव होना, आँख उठना, सूजाक के कारण भयंकर आँख उठना, आँखों की पीड़, माँड़ा, फूली, रोहा, टेंटर पोथकी आदि—

दोहा—

उठी आँख हो, वैठने, का भी यदि हो रङ्ग ।
स्वरस तुरत आराम से कर देता है दंग ॥
चोट लगी हो आँख में, घोर हुआ हो घाव ।
पीड़ा होवे, विकलता, देख पड़े न बचाव ॥
माड़ा हो फूली रहे, लाली होवे, खाज (१) ।
रोहा हो टेंटर रहे, सबका यही इलाज ॥
पूयमेह से जो उठी आंखें अप्रतिकार (२) ।
यही सबल वातादिहर, करता है उपकार ॥
नेत्र बरौनो मूल में जो कि पोथिका रोग ।
चन्दन सा रस का करे, इस पर लेप प्रयोग ॥
स्वच्छ सिला पर पीसकर, गूलर-पत्र पवित्र ।
आँखों में छोडे स्वरस, देखें लाभ विचित्र ॥
आँख नाक के कोन में, करदें स्वरस-प्रयोग ।
चित्त सुला कर भूमिपर, हरें आंख के रोग ॥
आंखों पर पट्टी यही, रक्खें यों ही आप ।
छूटेंगे फिर एक ही दिन में सब उपताप (३) ॥

अर्थ सरल है ।

---

(१) खुजली । (२) असाध्य । (३) रोग ।

नाक से चैली का गिरना, पीनस, घाव, नाकड़ा, लोहू- पीव आदि का गिरना—

चौपदे—

नाक से चैली गिरे पीनस रहे,
रुधिर पीव गिरा करे, पानी बहे।
घाव हो, कीडे पडे, हो नाकड़ा,
पत्र रस औषध सभी का है बड़ा॥

गूलर के पत्ते जल से पीस कर छान कर उसी से नाक धोना विशेषत पिचकारी या नाक धोने के यन्त्र से धोना, फिर कपडे की बत्ती मे दवा लगा कर नाकों मे जिधर घाव हो, चढाना। यदि दोनो नाकों मे घाव हो और एक ही साथ बत्ती रखने से साँस रुकती हो तो पहले एक ही नाक का इलाज करें और पीछे दूसरी नाक का इलाज करें वा मुह से साँस लेवें।

कान का घाव, दर्द, खाज आदि—

गीति छन्द—

कान मे होते हैं जो रोग-
सभी का हितकर यही प्रयोग।
कान मे पीड़ा हो वा घाव-
सभी पर इसका अमित प्रभाव॥
यथाविधि व्रण-सा करो प्रयोग-
छुड़ा लो कानों के सब रोग॥

गूलर के पत्ते वा नीम के पत्ते के काढे से कान धोकर भली-भाति पीव और सडे माँस आदि को निकालना, फिर रुई के फाहे या कपडे को तिनके मे लपेट कर धीरे-धीरे पोंछ लेना। फिर गूलर के पत्तो का रस १० बूंद कान मे अन्दाज से छोड़ देना। फिर एक मटर बरावर छोटे रुई के फाहे को इसी रस में भिगो कर कान मे रखना। उसके ऊपर एक बडे रुई के फाहे को वैसे ही भिगो

कर कान मे रखना। फिर बडे रूई वा कपड़े से बाध देना। कान के बाहर भी जहाँ तक फूला हो, यों ही बांधना।

दांतों का दर्द, दांतोंसे लोहू गिरना, पीब तथा बदबू का आना, मसूड़ों का हिलना, पैरिया—

दोहा—

दांतों के जो रोग हैं, पीड़ाप्रद संयोग।
बीच मसूड़ें दांत के, पीब, पैरिया रोग॥
दांत साफ करके धरे, बत्ती उक्त प्रकार।
बीच मसूडे ओठ के, पत्र पीस रस सार॥
मध्य मसूड़े जीभ के, पट्टी धरें विचार।
सब दाँतों के रोग में यही उचित उपचार॥

दाँतों की सब प्रकार की पीड़ा, विशेषत पैरिया रोग की (जिसमें दाँतों की जड़ से दबाने से भी पीब गिरती है) यही दवा है। पैरिया रोग बहुत कठिन है। डाक्टरों ने इसे असाध्य कहा है। दाँत उखड़वाने पर वा पैरिया के आराम होने पर भी भीतर जो पैरिया का विष पहुँच जाता है वह किसी २ को महीनों में रक्तपरिष्कारक औषध के सेवन पर आराम होता है। रक्त-परिष्कारक औषधों में प्रसिद्ध—'त्रिफलादि गुग्गुल, भृङ्गराजरस' वा 'अनन्तामृत—सुवर्णसालसा' का भी सेवन करें। पैरिया की जहरीली पीब का अंश पेट मे जाने से और भी कठिन रोग पैदा होते हैं। इससे इसकी दवा सयम (ठिकाने) से करें।

चार अङ्गुल के चौड़े कपडे मे दोनों ओर गूलर के पत्ते का गाढा रस (रससार) मल कर छाप कर पट्टी को दोहरी कर दें और उस पट्टी का एक आधा भाग होठ और मसूढ़ों के बीच मे रहे, मध्य भाग दाँतों पर तथा अन्तिम भाग जीभ और मसूड़ों के बीच में रक्खे। मुह में जो पानी हो उसे पहले चूस २ कर थूक देना चाहिये। पीछे विना पीब के अंश को भीतर निगल भी सकते हैं, जो उपकारक है।

सड़े दाँतों के निकालने या गिरने में जो नाक तक छेद हो जाता है, और रोगी के शब्द साफ नहीं सुने जाते, नाक का पानी आदि भी दाँतों के छेद से मुँह में आया करता है, यह पीड़ा भी, गूलर पत्र के गाढ़े रस की बत्ती ऊपर चढ़ाने और 'पेरिया' के समान रक्तपरिष्कारक औषध सेवन करने से आराम हो जाती है।

तालू का घाव, तालू का फटना, जीभ का घाव तथा कटना, निनांव आदि—

दोपदा—

कहीं जो हो तालू में घाव।
दिखा दो इसका सुखद प्रभाव॥

दोहा—

तालू फूटा, जीभ भी कटी, हुआ जो घाव।
मुँह में रख कर पोटली, कर दो दूर निनांव॥

गूलर पत्र पीस कर कपड़े में पोटली बनालें जीभ के सहारे पोटली को तालू फटने की जगह पर रक्खें। पोटली बराबर बदलती रहे। यों ही कटी हुई जीभ पर भी पोटली रहे, निनाव पर भी। बन पड़े तो जहाँ तक अधिक समय सम्भव हो गूलर के पत्तों की चटनी मुंह में अधिक परिमाण में रक्खी जाय। गूलर के पत्तों की वरिया (वटी) बना कर जो सुखा कर रखने को पहले लिखा है उसे भी मुंह में रख रस चूसा करें।

उपजिह्वा—

दोहा—

बढ़ती छोटी जीभ सी, है उपजिह्वा रोग।
इसे छुड़ालें आप कर, इस पर वटी प्रयोग॥
कपड़े में सब ओर से, गूलर–कल्क लपेट।
बने गाढ़ गोली सदृश, ऐसा धरो समेट॥

मुँह में इसको रख सदा, रस चूसें जो आप।
धीरे से मिट जायगा, घांटी का उपताप॥
होते हैं जो मांस के, रुक जाने से कष्ट।
और सभी दुखपाक के, होंगे रोग विनष्ट॥
फाहे यों ही स्वरस के, घांटी पर यदि आप।
दो दो घन्टे पर गलें, हरें, सकल उपताप॥

गले के भीतर कफ अटक जाने से सांस का आना जाना रुक जाता है, कभी-कभी गले में फुन्सियों के कारण अथवा व्रण (घाव) आदि के कारण भी साँस रुक जाती है।

इसकी शान्ति के लिये, गूलर के पत्तों को चटनी ऐसा, साफ सिल पर पीस डालिये उसे स्वच्छ पवित्र, चार छ अङ्गुल लम्बे चौड़े कपडे के दोनों ओर रख लपेट कर गोली वा गद्दी सा बना कर मुह में रख, उसका रस चूसते रहे। यदि घाव बड़ा हो और इससे लाभ न दीख पड़े तो गले के बाहरी भाग पर भी पत्ते को नियमानुसार पीस कर लेप करें या गूलर के पत्तों की सूखी वटिका मुह मे सदा रक्खें।

घांटी के बढ़ने, तालू के फूटने, मुह के घाव, निर्नाव, कैन्सर आदि मे भी यही चिकित्सा करनी चाहिये।

सिर दर्द वा शिरोरोग

दोहा—

करता है आराम सब, सिरका सिर का दर्द।
गुलरोगन के साथ मल, पट्टी भी दें सर्द॥

प्राय सब प्रकार के सिर दर्द मे सिरका मे गुलरोगन मिला कर दर्द की जगह पर मलना और ठंढी पट्टी देना।

जहाँ गुलरोगन न मिले वहाँ गाय का घी, नारियल का तेल, तिल का तेल और भैंस का घी भी क्रमश अच्छे हैं, इनके साथ मिले तो कपूर और गुलाब

का फूल भी पीस कर सिरके में मिला लेना और लगाना। अगर सिरका भी न मिले तो यों ही विना सिरका ही जो चीजें उपर्युक्त में से मिल जावें उनसे काम लेना।

लू लगना।

दोहा—

लू लगना जिसको कहें, अंशुवात जो रोग।
उससे भी रक्षक यही, पानक, लेप प्रयोग॥

गर्म स्थानों में गर्मी के दिनों में प्रायः जब पश्चिमी बयार बहती है, बहुधा दोपहर को मनुष्य को लू लग जाती है। इसके कारण से बहुत लोग मर भी जाते हैं।

इससे गूलर के पत्तों का पानक ही पीने को देवें और सारे शरीर में भी लगावें। जब-जब प्यास लगे तब-तब पानक ही पिलायें और प्यास के विना भी पिलावें।

कच्चे आमों के फल उबाल कर उसका पन्ना निकाल कर मिश्री मिला-मिला कर पिलायें और बदन (सारे शरीर) में भी लगावें।

बिगड़े घाव, चकाव, कीड़े पड़ जाना, कारबंकल, फोड़े, फुन्सियाँ, सैन आदि—

दोहा—

फोडे फुन्सी गिल्टियां, जहरबाद के घाव।
विकृत भगन्दर, सैन, कृमि, दूषित, सविष, चकाव(१)॥
प्रतिदिन धोवो घाव, दो, कीडे कील निकाल।
रगड़ रगड़ कर तूतिया, सडे मांस का जाल॥
जल मिश्रित हो तूतिया, नहीं तुत्थ का खण्ड।
रगड़ो बिगडे अंश पर, छूटे, घाव प्रचण्ड॥
विकृत घाव पर लेप ही, करें तुत्थ(२)का आप।
विकृत मांस कट जायगा, छूटेगा उपताप॥

---

(१) कारबंकल। (२) तूतिया।

सैनों में, भीतर करें पिचकारी से तुत्थ।
दोष सकल मिट जायगा, विकृत व्रणादिसमुत्थ॥
घाव साफ कर फिर भरें, स्वरस अनेक प्रकार।
ऊपर से पट्टी धरें, तब होगा उपकार॥

(छन्द-गीतिका)

तूतिये के जल से, पिचकारी समझ कर दीजिये।
पीव भी इससे निकालें, यों चिकित्सा कीजिये॥
स्वरस में डोरे भिगा सब छिद्र तक पहुँचाइये।
उक्त पट्टी भी धरें, ऊपर इसे न सुखाइये॥

घाव आदि में जहाँ मुर्दार मास और बहुत बिगड़ा हुआ व्रणाश हो वहाँ तूतिये को चटनी-सा जल में पीस कर इसका लेप भी रख सकते हैं और पीछे धो कर गूलर पत्र-रस के गाढे अंश का प्रयोग देवें।

कैन्सर और गण्डमाला—

दुष्ट, व्रण, कैन्सर को सर करता यही।
गण्डमाला को भी है, हरता यही॥

जीभ मसूड़े आदि मुख के स्थान में और दूसरे स्थानों में भी कैन्सर होता है जिसकी चिकित्सा 'रेडियम' मात्र है। गूलर पत्र-रस वा गूलर के दूध की पट्टी रखने और खाने आदि के योग से कैन्सर भी आराम होता है, भीतर रक्तपरिष्कारक औषधि का प्रयोग भी रखना चाहिये। यदि इस बीमारी में ज्वर आदि हो तो उनकी भी प्रथम लिखित ज्वर की चिकित्सा करें या पानक ही ४ बार देवें।

भगन्दर—

बरवा—

अन्दर यदि हो कहीं, भगन्दर रोग।
नाड़ीव्रण सा उस पर, करें प्रयोग॥

पाखाने की राह मे दो अङ्गुल चारों ओर वा मूत्रमार्ग और पाखाने की राह के बीच मे घाव हो जाते हैं उन्हे भगन्दर कहते है कभी २ और भी इधर-उधर बिगडे घाव होते है वे भी भगन्दर ही कहलाते हैं। इनकी चिकित्सा नाड़ीव्रण (सैन) की तरह करनी चाहिये। भीतर खाने के लिये रुधिर साफ करने वाली ओषधि, जो कुष्ट रोग की चिकित्सा में लिखी है, उसका भी प्रयोग करें।

अर्श (ववासीर)—

दोहा—

ववासीर के नाम जो, प्रकटित अर्शोरोग।
मलना इस पर पत्र-रस, वा हो वर्ति-प्रयोग॥

वरवा—

रक्तपित्त सा कर दें, पानक योग।
वल हो, चन्द्रप्रभा का करें, प्रयोग॥

गीतिका—

काकजङ्घा-मूल, गूलरपत्र पीस मँगाइये।
चार मिरचों में रगड़ फिर छान कर पी जाइये॥
जो बची सिट्ठी है, मस्सों पर उसे मल दीजिये।
और मस्सों पर रहे, कपड़ों से यों कस लीजिये॥

मलद्वार के मार्ग (पाखाने की राहों) में एक वा अनेक रूप, रङ्ग के कई मसे होते हैं। उनमें किसी में दर्द होता है, किसी में नहीं होता, किसी से लोहू गिरता है, किसी से नहीं भी गिरता, कहीं कहीं विना मस्से के भी दर्द रहता है, किसी में केवल लोहू गिरता है और किसी में लोहू और पीव भी गिरते हैं। इन्हीं मे पीछे कभी २ 'नाड़ी व्रण' वा सैन हो जाता है जिसका छोटा भाई 'भगन्दर' भी है जिसकी चिकित्सा अलग लिखी गई है।

इनमें रक्तपित्त रोग में लिखित 'पानक' समान 'पानक' वना कर प्रात और सायं दो वार पीना चाहिये। रोग की कठिनता में दोपहर को भी पीना उचित है।

इस रोग मे प्राय: कब्ज भी रहता है, इसके लिये 'पानक' में रेंड़ वा 'त्रिवृता' की जड़ और ।) भर गूलर के पत्ते को, ८ रत्ती वा १० रत्ती 'काकजङ्घा' और चार मरिच इन सबको २ रुपया भर पानी में पीसे और तब छानकर 'पानक' पीने के दो घण्टे बाद फिर भी पीना चाहिये। (परन्तु यह 'काकजङ्घा' का मिलित योग दिन रात में पीने के लिये एक ही बार होना चाहिये और इसका ध्यान रखना चाहिये कि प्रथम प्रथम 'रविवार' ही को काकजघा का प्रयोग प्रारम्भ हो।)

विसर्प

(वसन्ततिलका-छन्द)

यों ही विसर्पविष, सर्वविष-प्रकारी,
फैले कहीं, वदन में जनतापकारी ॥
पत्रप्रलेप विधि है-तव तापहारी,
यों सार भी तदनुसार रुजापहारी ॥१॥

मुँह आदि स्थानों मे जलन के सहित फैलने वाले झलके समान जो विसर्प रोग होता है, वह भी उक्त ओपधि से शान्त होता है। रक्तपरिष्कारक औषध और पानक का भी प्रयोग होते रहना चाहिये। यहाँ 'सार' का अर्थ गूलर के घिसे हुए पत्तों का गाढा अंश है वा उदुम्बरसार भी।

श्लीपद (फीलपांव) वा सांजर—

दोहा—

श्लीपद सांजर में करो, यों ही लेप प्रयोग।
ज्वर समान भीतर करो, औषध का उपयोग ॥
इन्जेक्शन भी दीजिये, पत्र स्वरस का आप।
छूटेगा ही जल्द तब श्लीपद का उपताप ॥

'श्लीपद' फीलपाव को कहते हैं। यह कठिन रोग है, अत इसमे विधिवत्

उदुम्बरवटी वा गूलरपत्र का प्रयोग करना चाहिये। केवल गूलर के पत्ते का 'पानक' पीना वा आधे तोले गूलर पत्रवटी खाकर थोड़ा गोमूत्र भी पीना चाहिये। अथवा वड़ी हर्रे को रेंडी के तेल में भून कर उसका चूर्ण १) रु० भर प्रात: शाम खाकर 'पानक' पीना चाहिये। अथवा ॥) से १) भर तक इसी हरीतकी को सोने के समय ही खाकर केवल जल पी लें। अथवा पुनर्नवादिमण्डूर का भी प्रात: ५ रत्ती से ।) भर तक सेवन करें। हरिताल-भस्म चौथाई रत्ती से १ रत्ती तक, सिद्धरस वा विशुद्ध मण्डूर २ रत्ती से ४ रत्ती तक माठा में रगड़ कर खावें तथा ऊपर से गोमूत्र सहित 'पानक' भी पी लें। दिन रात में चार बार यह प्रयोग हो। सम्भव हो तो इसमें २ सरसों बराबर ताम्र-भस्म भी छोड़ दें। महाचन्द्रप्रभावटी का प्रयोग इसमें उपकारक है। नियमानुसार गूलर-पत्र के लेप को न भूलें और न पानक का पीना ही।

लड़कों के जन्म—समय मार्ग का छिलना, घाव, शोथ तथा ज्वर का हो जाना—

दोहा—

लड़का होने के समय, छिले मार्ग निरुपाय।
व्रण हो, ज्वर हो, शोथ हो, तब भी यही उपाय ॥
धोवो व्रण, दो पोटली, बत्ती दो सविधान।
और चिकित्सा भी करो, ज्वर के सभी समान ॥

लड़का होने के बाद जो मार्ग फट या छिल जाता है उसका इस प्रकार उपचार कीजिये कि—साफ सिल पर गूलर के साफ पत्ते, पीस कर उसमें जल चौगुना देकर साफ कपड़े से छान लें, तब उसे आग पर खौला कर इसी काढ़े से पिचकारी दें, 'डूस' दें, बत्ती वा पोटली घाव के स्थान में रक्खें और दो, तीन या चार बार पानक भी पिलायें। शक्तिशाली लोग—ज्वरहर बलकारक मकरध्वज आदि औषध का भी अलग प्रबन्ध करें और दूध इत्यादि का पथ्य भी देवें। बाहर कोई स्थान फूला हो तो वहां भी सविधि लेप होवे।

कुष्ठ वातरक्त, दाद, उकौंत, वात, सुन्न हो जाना—

दोहा—

सविधि लेप हो कुष्ठ में, हो आहार विहार ।
ऊपर लिखे प्रकार से, हो औषध व्यवहार ॥
वात-रक्त में, और भी, जो कि चर्म के रोग ।
हैं प्रसुप्ति आदिक करें, उनमें यही प्रयोग ॥
तो थोड़े ही समय में, छूटेंगे सब रोग ।
पायेंगे जिससे सभी, जीवन के सुख भोग ॥
यदि उकौंत हो, दाद हो, होवे खाज बिवाय ।
चकवड़ गूमा के 'स्वरस-मिश्रित' स्वरस उपाय ॥

गूलर पत्र ७ तोले, रजगुरु (वा वनतुलसी) ४ तोले, दन्ती की जड़ १ तोला, रेंड़ की जड़ १ तोला, हर्रें १ तोला, अनन्तमूल १ तोला, बरियार के बीज १ तोला, फर्द बूटी (बलाभेद) १ तोला इन सबों का चूर्ण या गोली बना कर आधे तोले से एक तोले तक, प्रातः दोपहर, सन्ध्या तथा ९ बजे रात को भी जल के साथ खाना ।

यदि उकौंत हो गया हो तो बडे चकवड़ ('कसौंजा' वा कासमर्द) के पत्तों के रस से गूलर के पत्ते पीसे जॉय और उसका रस मला जाये, यों ही महीन पिसे पत्ते ऊपर से छाप दिये जायँ, निरन्तर कुछ दिनों में छूट जायगा। जिन्हें सुभीता हो, उकौंत पर वटवृक्ष के दूध रख दिया करें। कुछ दिन में पक जाता है। तब गूलर के पत्ते ही पीस-पीस कर नियमानुसार छापे।

दाद और खाज में—'गूमा' के पत्तों के रस से गूलर के पत्ते पिसे जाये। उसका पहला हिस्सा दाद खाज पर सहाते सहाते मला जाय। फिर और बाकी बचा हुआ औषध भी जहाँ व्रण सा हो गया हो, नियमानुसार छाप दिया जावे और वह सूखने न पावे। और बेवाय में यही भर कर सेंका जाय और कपडे से बांध दिया जाय कि सूखने न पावे तो वह आराम हो जायगा।

दाद और खाज में गूमा के पत्तो के रस मे गूलर के पत्तों का रस वा साग की गाढी पिमी हुई चटनी के ममान पर कुछ पतला विधिवत् लेप छाप दिया जाय और वह सूखने न पावे।

कुष्ट मे पथ्य—दस्त साफ रखना, गेहूं की रोटी खाना, गूलर के फल की तरकारी और गूलरपत्र का साग, दस्त के लिये रेंड़ के नर्म नर्म थोडे पत्ते भी घी में तलकर रखलेना चाहिये, यही पथ्य है। नमक, दही और उरद हाथ से भी न छूना चाहिये।

कुनख, अपरस, खर्रा, बदखोरा

दोहा—

करता है यह कुनख को कर आराम विमुग्ध।
कोठाडूमर के धरो, यदि तू उस पर दुग्ध॥
यों ही गूलर दुग्ध भी, देकर देखें आप।
गोघृत गन्धक को पका, कर हर ले उपताप॥

सोरठा—

छापें गूलर पत्र, बदखोरे के रोग में।
हितकर है सर्वत्र, अमचुर चटनी लेप भी॥

बहुधा लड़कों ही के कपार मे 'दाद' और पकी 'खाज' के रूप मे बदखोरा रोग होता है। जो गूलर के पत्रों के छापने से भी छूट जाता है और पुराने अमचुर (कच्चे आम के फल की सूखी हुई खटाई) के छापने से भी दो दिन में लाभ न हो तो तूतिया का प्रयोग भी करना चाहिये।

अधेड़ी—

दोहा—

जलन सहित बहु फुन्सियां, होतीं आधे अङ्ग।
यही अधेड़ी रोग है, यही चिकित्सा ढंग॥

इस में शरीर के आधे ही हिस्से में जलन के सहित फुन्सियां होती हैं। कपड़े को 'उदुम्बरपत्र-कल्क' के जल से भिगो कर घावों पर पट्टी की तरह रखना जिन्हें सुभीता हो गूलर का दूध भी रक्खें।

अनेक प्रकार की वात-पीडा—

दोहा—

रक्तविकारज जो व्यथा, वातविकारज रोग।
हितकारी होता नहीं, जहाँ और कुछ योग॥

[हरिगीतिका-छन्द]

छिन छिन छिपी छिदती, वदन में ज्यों सुई जलती हुई।
अति विकल कर फिर निकल कर, सब ओर ही चलती हुई॥
यों प्राणहर जो वात-पीडा का भयङ्कर रोग है।
उससे बचाने के लिये यह अमृत सदृश प्रयोग है॥

रक्त-विकार वा वात-विकार से जो पीड़ायें होती हैं वा रोगाणु वा जीवाणु के कारण से जो पीड़ायें होती हैं, जिसमें तैल मर्दन, स्वेद, बिजली के यन्त्र आदि उपचार से कुछ भी उपकार न हो और किसी २ को ऐसा भी कष्ट हो कि शरीर में कहीं कहीं आग से तपाई हुई सुई घुसेड़ दी जाती है, चिकित्सायें सब व्यर्थ हो गई हों, रोगी के मरने की घड़ी भी गिनी जाती हो, ऐसी दशा में भी गूलर-पत्र ही प्राण बचाते हैं। गूलर के पत्ते थोड़े जल में पीस कर उसके रसको आग पर थोड़ा २ गर्म कर धीरे २ पीड़ा के स्थान पर एक वा दो घण्टे मलते जाना और सेंकते भी जाना, पीछे चटनी सा कुछ गाढा अंश छाप (लेप) कर पान के पत्ते को उस पर रख, रुई का पहल देकर विधि के साथ बाँध देना और लेप को बराबर सेंकते रहना।

झुनझुनियां

दोहा—

निकल पड़ा है आज कल, जो झुनझुनियां रोग।
उससे रक्षक योग हैं, पानक—लेप प्रयोग॥

झिनझिनी और गर्मी पेर से ऊपर को बढती वा चढ़ती है। मनुष्य गर्मी मे व्याकुल हो जाते और मरते भी है।

इस रोग की सैकड़ों घडे जल मे स्नान कराना चिकित्सा है। कभी २ इससे गर्मी (विशेषत. पेट की) नहीं शान्त होती है तव गूलर के पत्तों का 'पानक' ही वार २ पिलाना और देह में छापना भी चाहिये। गूलर के पत्तों के सारे शरीर में लेप से पानी से स्नान कराने की भी पूर्ति होती है।

भूत लगना (योषापस्मार वा हिस्ट्रिया)

(यह एक प्रसिद्ध रोग है)

महारमराज रस १ मसूर भर, मिश्री वा दूध के अनुपान से देना।

वा

चन्द्रसुधा की गोलियां,
झरबेरी के मान।
हरे हिस्ट्रिया रोग को,
पानी ही अनुपान ॥

इसकी गोलिया बना कर एक सप्ताह तक जल से देवें। दोनों योग 'मृगी रोग' मे भी दे सकते हैं।

यह रोग कभी कभी सचमुच भूतदोष से भी होता है। यहाँ दवा नहीं काम करती, भूत-विद्या वालों से दिखाना चाहिये।

आग से जलना—

(गीतिका)

पीस कर पत्ते चढ़ायें, आग से जो कुछ जले।
पर्पटी जल में तरल कर वा सरलता से मले ॥
छूट जायेगी जलन, होंगे फफोले भी नहीं।
तुर्त ही मिट जांयगे, जो घाव भी होंगे कहीं ॥

अर्थ स्पष्ट है।

साँप, विसखोपड़े, बिच्छी, बर्रें, हड्डे, मधुमक्खी आदि जहरीले जीवों का काटना—

पीस कर अपामार्गके मूल,
पीजिये अहिविष हरे समूल।
जवाइन जो वन की है और,
सर्वविष हरतो है सब ठौर।

॥) भर चिचिरे की जड़ पीसकर पीने से सर्प-विष शान्त होता ।

बन जवाइन (जो चन्द्रसुधा-सी वा चन्द्रसुधा ही है) ५ से १० रत्ती तक ५ मरिच के साथ पीसकर दो चार वार पिलाने से सांप, विसखोपड़े आदि के विष शान्त हो जाते हैं। यह सब प्रकार परीक्षित है।

दर्शन से भी तुरत ही, अपामार्ग के मूल।
बिच्छी के सब विष हरे, लेप न जावे भूल॥

केवल चिचिडे के मूल वा पञ्चाङ्ग को हाथ में लेकर रोगी से कहना कि देखो इसे, सब बिच्छी का विष उतर जाता है यदि न उतरे तब लेप भी करना।

चौपदा—

जहाँ हो, सर्प दंश का स्थान,
करो व्रण, हरो रुधिर विष मान।
स्वरस की उस पर पट्टी धरो,
पिलाकर पानक भी विष हरो।
कहीं बिच्छी भी मारे डंक,
कीजिये यही योग निश्शंक।
अगर हड्डे भी काटें कहीं,
चिकित्सा तब भी करनी यही।

बिच्छी के डंक मारने पर, छुरी से कुछ गड्ढा कर, डक की जगह

पशुओं के सब रोग के करें उचित उपचार ॥
खाने में मात्रा करें, पशु-बल, रोग बिचार ।
समझ लीजिये यह सदा, है उनका आहार ॥

और भाँति के पशु गधे—

जन्तु जीव जगत गधे के,
खच्चर, भैंसे, गाय ।
ऊँट, भेड़, बकरी, हरिन,
पशुओं के समुदाय ।
सूअर, कुत्ते, बिल्लियाँ,
बानर, भालु, सियार ।
बाघ, सिंह, गेंड़े, शशक,
चीते गोह हुँड़ार ।

पक्षी, मूषक, अहि, नकुल, सांही के सब रोग ।
हो जावेंगे शान्त कर जाँचे यही प्रयोग ॥

अर्थ साफ और स्पष्ट है ।

हमारा दृढ विश्वास है कि जिस प्रकार हाथी घोडे बैल आदि को आराम करता है, उसी भाँति यह उदुम्बर पत्र विज्ञान आगे लिखे पशु और जन्तुओं की रक्षा करेगा । जैसे—

ऊंट, खच्चर, गधे, हरिन, सूअर, बिल्लियाँ, बानर, भालु, सियार, बाघ, सिंह, चीते, गेंडे, मूस, साँप, खरगोस, साही,-गोहटी आदि के व्रणादि रोगों मे इससे अवश्य लाभ होगा ।

रोला छन्द—

अमृत कहे रोगी से, पीकर मुझे बचाले ।
लक्ष्मी कहे रङ्क से, रख घर मुझको पाले ॥

यों ही गूलर पत्र सभी से करै निवेदन।
रख कर अपने शरण छुड़ाले मेरे वेदन॥

अथवा यों कहे कि—

छप्पै छन्द—

लक्ष्मी जी यदि कहें, रङ्क से मुझे बचाले।
रखकर अपने शरण, सदन में अपने पाले॥
अमृत कहे रोगी से, तू मेरा सेवन कर।
मुझे बचाले मेरे सारे कठिन दुःख हर॥
यों गूलर के फल पत्र की, सबसे विकल पुकार है।
सुन रोगो, तू रक्षा करे, शरण उदुम्बर-सार है॥

अथवा

मालिनी छन्द में यों कहिये।

यदि अमृत पुकारे, रोगियों से बचाले।
हम विकल हुए हैं, पी हमें पाले॥
यदि विकल तेरा हो, हन्त लक्ष्मी पुकारे।
रख शरण हमें तू हे दरिद्रो! उबारे॥
अब दल कहते हैं, गूलरों के उपेक्षा।
मतकर कर मेरी, रोगियो! प्राण-रक्षा॥
व्यवहृति कर सद्यः, साञ्जलि-प्रार्थना है।
विनतिततति हमारी, साग्रहाऽभ्यर्थना है॥

इति शुभम्।